जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत—

हरगौरीविवाह[1] नाटक

.... [2]नं जगति कर्ण्ण इवावतीर्ण्ण : ॥

श्रीश्रीजयजगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराज एहने महोदार चरित्र आओर कर्म्म कत कहब ॥

नटी ‚ धन्य धन्य महाराज ‚ एहना कुल एहने उचित ‚ किछु नगर वर्ण्णना मोंजो कहइ छजो ॥

सूत्र ‚ अविलंबें कहु ॥

॥ नगरवर्ण्णना ‚ नटयुक्ति । गीत ॥ मालव ॥ चो ॥

वन्दनेवार चएल ठाम ठाम ‚ भगत नगर एहे गुण अभिराम ॥
वेद मङ्गल धुनि अहनिस होइ ‚ दिनकर किरण परब बओने गोइ ॥
धरम करम सबका थिर नीति ‚ तें फले काहुक होअ न भीति ॥
त्रिभुवन जननी करथि निवास ‚ अचिरेहि देथि सबक अभिलास ॥
भनइ वंशमणि हे जगदम्बे ‚ नृपजगजोति मन पुर अविलम्बे ॥

॥ गीतार्थ भाव ।[5]वति ॥

सूत्र ‚ हे प्रिये भल कहलछ ‚ परन्तु एहना उत्सव ‚ कओन नृत्य उचित थिक ॥

नटी ‚ हे नाथ ‚ तबी अपनेहि विज्ञ ।।

सूत्र ‚ हे प्रिये ‚ श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्ल महाराज शिवभक्तिपरायण तन्हिका चिताश्रित जे‚ कथा तथीहि उल्लास ‚ ते हमराहु हरगौरीविवाह नामे जे नाटक महाराजाइक कएल से नाचू ॥

---

1 यथार्थ पृष्ठ संख्या-1; एक्सपोजर-१३क। मूल हस्तलेखमे आरम्भक कमसँ कम एक गोट पत्रयुग्म नहि अछि तेँ नान्दीश्लोक, नान्दीगीत, सूत्रधार-नटीक वार्तालापक किछुअंश आ जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रशस्ति श्लोक नहि भेटैछ। प्रशस्तिश्लोकक अन्तिम चरणांशसँ नाटक उपलब्ध अछि। अतः एतहिसँ यथार्थ पृष्ठक गणना आरम्भ भेल।

२. यथार्थ पृष्ठ संख्या—२; ऐक्सपोजर—१३ ख।

नटी . एहने उचित ॥
सूत्र . त्वराओ हमरा दुहु व्यक्ति मेना महादेव काछए जाऊ . चलह ॥

सूत्रनिस्सारगीतं ॥ नाट ॥ परिमान ॥
उछाह सोहाओन हरक चरीत .
ताहि विशेषे विवाह विहीत ॥

कोणभाषा ॥

सूत्र . हे प्रिये महादेवक चरित्र सहजहि सुन्दर . विशेष गौरीविवाह ॥
नटी . हमराहु वच, तखीउ'ल्लास् मेना उक्तिप्रयुक्ति अति विचित्र ॥

द्वितीय कोणे ॥

नटी . एहना उत्सव विलम्ब जनु कर . ॥
सूत्र . अवश्य ॥

इति प्रथम: सम्बन्ध : ॥

॥ ततो नन्दिभृङ्गि सहितो महादेव: प्रविशति ॥

कामोद ॥ प्र ॥

डिमिकि डिमिकि करे डमरु बजावए .
बसहु चढ़ल बुढ़ धीरे धीरे आवए ॥
तपसिआ कत (कत) भेष बना(व)ए .
सास गोरि दुहु विहुसि हसावए ॥ ध्रुव ॥
सने कर जप तप सने कत वेषी .
गरले डरकि पर ओहे परदेशी ॥
रहथि भूत सगे बसथि मसान .
जुगे जुगे जोगिआ धरथि धेआन ॥
प्रणवि प्रणवि एहु गावे कृष्णराए .
अदवुद शिव हे परमपद पाए ॥

(महा.) हे नन्दी हे भृङ्गी
॥ श्लोक: ॥ शठे कठोर चित्तोऽहं . भक्ते का[२]ष्ण कोमल: ।
अतो भवन्तो भक्तो न . त्यक्तु क्षणमपि क्षम: ॥

---

१. य० पु०सं०—३; एकम—१४ क ।
२. य० पु० सं०—४; एकम—१४ ख ।

नन्दिभृङ्गिणौ . हे प्रभो ईश्वर भक्तवत्सले हो ॥

इत्युक्त्वा नन्दिभृङ्गिणौ गायत: ॥

कोराब ॥ ए ॥

धवल बसहु पर चढ़ल महेश . भसम धवल तनु देखिय सुवेश ॥
हाडमाल धवल धवल रुण्डमाल . धवल कपाल कर शशधर भाल ॥
शिरहु धवल रहु सुरसरि धार . धवल धएल शिर धुथुर मन्दार ॥
शिवक चरण रवि कोटि [सम] धाम . नृपजगजोति कर तसु परणाम ॥[१]

महादेवा . हे नन्दी हे भृङ्गी . जहिआ सञो सती देहत्याग कएल तहिआ सञो . मोञो वियोग व्याकुल रहलो . अतएव सती हिमालयक गृह अवतार लेलछ . है चलह तसए जाऊ ॥ |

[२]उभौ, देवाधिदेव जे आज्ञा ॥

॥ महादेवनिस्सारगीतं ॥

आशावरी ॥ खर्ज ॥

सती विओगे धैरज नहि भेल .
हिमगिरि भवन जनम तहि लेल ॥

॥ कोणभाषा ॥

महा . हे नन्दी . सती मोरा अर्द्धशरीर ॥
नन्दी . हे प्रभु, एहने ॥ द्वितीय कोणे ॥
नन्दी . हे भृङ्गी . ईश्वरक कार्य्य त्वराए कह ॥
भृङ्गी . हमरा आन कओन कार्य्य ॥

इति द्वितीय: सम्बन्ध

आशावरी रागेण महादेवप्रविशति ॥

कोणभाषा

महा . हे नन्दि हिमालय सन्निधान अएलाहु ॥
नन्दी . हे देवाधिदेव अति रम्य स्थान ॥ (द्विको ॥)
नन्दी . हे प्रभो . ई ऋष्याश्रम सन देखइ छी ॥
महा . हिमालय अनेक ऋषि तपस्या करैछ ॥ (द्विको ॥)

---

१. रागभजन संग्रह गीत—९, पाठान्तर नहि ।
२. य० पु० सं०—५; एकम—१५क ।

महा ‚ बड मनोरम स्थान लन एक ओहा बै | [1]शु ॥
नन्दी ‚ जे आज्ञा ॥

॥ मालव रागेण ऋषिराश्रमं [वासु सहितः] प्रविशति ॥

॥ कोणभाषा ॥

आज आक धुथुर अनेक भेटल मालत्यादि नहि भेटले ‚ ई आश्चर्य बड

[वासु ‚ जे पावल ‚ से उत्तम] ॥ झिको ॥
(ऋषि ‚) आज मोरा दक्षिण चक्षुः स्पन्द होइछ ‚ ते अपूर्व दर्शन होमाओ पार ॥
[वासु ‚ बहुत नीक]

॥ ऋषीश्वरं पश्यति ॥

हे देवेश मोर दण्डाङ्ग प्रणाम ‚ धन्य मोर भाग्य ‚ आज हमरा तपस्या साफल्य ‚ जे ईश्वरक चरणारविन्द देखल ॥

(महा ‚) [हे ऋषि कुशलमस्तु]
(ऋषि ‚) हे परमेश्वर ओहाक गुणानुवाद करैं छओ अवधान कह ॥
[महा, ‚ ओहाइ किश ॥]

॥ ऋष्युक्त गीतं ॥ मालव ॥ धए ॥

घर नहि संचर पहिरि बघंबर ‚
त्रिभुवनपति तोहे देवा ‚ मोरि सेवा लो ॥
कओने पुने अपुरुब रूप तपसी,
बड रसी ॥ ध्रुव ॥

भसम ओंग दए मशान वास | [2]कए
पर के दिए सुख ठामे ‚ अभिरामे ‚ लो ॥
शीर धरिए गांग ‚ नारि आध ओंग,
करिए ध्यान समाधी ‚ जोगनिधी ‚ लो ॥
नृपजगजोति मति ‚ शिवक चरण गति ‚
अवसर बिसरह जनु ‚ मोहि पुनु ‚ लो ॥[3]

१. ब० पृ० सं० ६; एबस०—१५ ख ।
२. ब० पृ० सं० ७; एबस०—१६ क ।
३. गीत पंचाशिका, गीत-८ ॥ पुनर्हर स्तुति नचारी ॥ श्री ॥ चो ॥

महा ‚ ऋषे साधु साधु ॥
[वासु ‚ हे पुराय, हमहु किछु कहै छी ॥

॥ वासूक्ति गीतं ॥ सिंदु ॥ चो ॥
खाए मिथल हमे ॥
सर्व्वे हसन्ति ॥

ऋषि ‚ हे सुभागल

तमाज गुण ‚ कुसुमक रङ्ग थोर दिने बहि जाए ‚
सहजे गुण ‚ सुगाक रङ्ग कथिहु नहि[1] जाए ‚] ॥

(महा) ‚ ओहाओ नन्दिभृङ्गि सहित एतए रहू गोओ हिमालयक दर्शन कए अबै छओ ॥
ऋषि ‚ ओहाक अधीन त्रैलोक्य ॥

॥ महादेवनिस्सारगीतं ॥ धनाश्री ॥ख॥
शीतल सौरभे हिमगिरि सोभे,
ततहि जाएब हमे गौरिक लोभे ॥
कोणभाषा ॥
गौरी कति बढि भेलि छलि बहु ॥

झिको ॥
आज सहजहि देखबि ह(महु) ॥

[ऋषि ‚ हे नन्दिभृङ्गि खन एक हमरा आश्रम विश्राम कह
नन्दी ‚ सर्व्वथा ॥]

॥ ऋषिनन्दिभृङ्गिणो जमनीपट्टं दत्वा निस्सरन्ति ॥
इति तृतीयः सम्बन्धः ॥

॥ अथ गौरी | [2]सहितौ मेनहिमालयौ प्रविशतः ॥
मङ्गल गीतं ॥ कौशि ॥ ए ॥

हरखित गिरिराजे देल परवेश ‚ गौरि मेना दुहु संगे परम सुवेश ॥
रूप गुणे समधुत देखिअ कुमारि ‚ जुवति सबहु पर सेहे बरनारि ॥
विविध रतने तनु पसरलि काँति ‚ कहथि मधुर बोल कत कत भाँति ॥
नृपजगजोति कह न कर कलेश ‚ तुअ अभिमत जत पुरत महेश ॥

१. 'रहि' सेहो पढ़ल जा सकैछ ।
२. ब० पृ० सं०—८; एबस०—१६ख ।

हिमा, हे प्रिये हमर महिमा किछु सुनु ॥

श्लोकः ॥ हिमालयोऽहं विख्यात, 'पर्वता'नामधीश्वरः ।
मदवष्टम्भमासाद्य, पृथ्वी भवति निश्चला ॥

मेना, हे प्रभु, ई, एहने, हमरो किछु गोचर सुनु ॥

श्लोकः ॥ एणी विलोचना मेना, रूप शील समन्विता ।
त्वत्पाद युग्मकाम्भोजे, शिरसाधारयाम्यहं ॥

[गौरी हे तातः, हे मातः, किछु विज्ञप्ति हमरो ॥

उभौ, हे प्राणप्रिये पुत्रि, कहु कहु ॥

श्लोकः ॥

(गौरी), गिरिराज पितस्तव पादयुगं रुचि निर्जित शोण सरोज दलं ।
परमंव तथापि च भक्ति वशा, न्मनसा कलये वसुधा वलये ॥

उभौ, साधु साधु ॥]

हिमा, हे प्रिये जेहाक शील जेहन थी(क), परन्तु, कओन कओनओ गौरीक चरित्र देखि परम आनन्द होइछ ॥

मेना, हे नाथ बालचरित्र अद्भुत ॥

॥ ततो योगिवेषो महादेवो गीतेन प्रविशति ॥

मालव ॥ ए ॥

पुलकित तनु मोर रे रे तसु गुण सुमरि सुमरि अभिरामे,
हृदय जुड़ाओल रे रे डिठि भरि देखब बदन हिमधामे ॥

कोणभाषा ॥

कओन व्याज कए गौरी हमे देखबिह ॥ध्रुवो॥
हम ए वेषे के चिन्हत ॥

॥मेना महादेवौ परस्परमवलोकयतः ॥

महा, हे मा [ता], जेहाक कन्या कहिनि छथि ॥

मेना, हे प्रभु, एहि भिखारीक उक्ति सुनै छी ॥

---

१. 'विख्यातः पर्वता' उचित होयत ।

२. ग० पु० सं०—९; एवस—१७क ।

॥ मेनाक्ति गीतं ॥ कोराय ॥ चो ॥

[1]परतहु पुछ मोहि बाउलि भवानी, कतिएक भेलि अछि देखए देह आना ॥
भीखि वेआजे वास मोर आवे, मनमोहन जोगिआ भल गावे ॥ ध्रुवं ॥
ए माइ हे मोहि अजगुत लागु, सुतलि गौरि जोगिआ देखि जागु ॥
जाहि जोगिआ देखि दुरहि पराई, ताहि जोगिआ कोर गौरि खेलाई ॥
भनइ विद्यापति सदाशिव सुनु, ओ जोगिआ वर होएत पुनु पुनु ॥

हे गिरिराज, अओरो कौतुक देखई छी, ओ जोगिआ हमरि कुमारि देखि हसैछ ॥

[हिमा, जोगी कौतुका]

॥ मेनोक्ति गीतं ॥ असावरी ॥ चो ॥
देखहो गे माइ हे जोगि रङ्गरसिआ,
गौरि मुख हेरि हेरि हसए बिहुसिआ ॥

विभूति भूषण गिम फणिमणि शोभे, राजकुमारि कत लावए लोभे ॥
[2]शिर शशधर करे डमरु बजावे, चन्चल लोचन मनमथ भावे ॥
पुनुपुनु आवए हटल न माने, कवने परि बोलब बचन निदाने ॥
भनइ तरानन्द करहु उछाहे, बड समुचित गौरि शंकर नाहे ॥
हे जोगी तोहर ई कओन भाँति, हाडमाल साप टाड जटाजूट भस्मकूट शूल हाथ डमरु बजाए की मँगै छह, ह अन्न भिक्षा लेहु ॥

॥महादेवो भिक्षांत्यक्त्वा सोरठिरागेण निस्सरति ॥

कोणभाषा ॥

हमे ऋष्याश्रम जाएब ॥ ध्रुवो ॥ एतए ऋषि पठओवाह ।

मेना, हे गिरिराज बड आश्चर्य, जोगी भिक्षा त्यजि गेलाह ॥

हिमा, जोगी मङ्गी रङ्गी त[कर] मन के जान, कुमारी योग्य भेलि, एक शिखर भए विवाहक चिन्ता । [3]कल गए ॥

---

१. ग० पु० सं०—१०; एवस०—१७ख ।

२. ग० पु० सं –११; एवस०—१८क ।

३. ग० पु० सं०—१२; एवस०—१८ख ।

[मेना , प्राणेश्वर , हमे स्त्री जातिका पुरुष आज्ञा मानिअ , ए
धर्म चल] ॥

॥ मेनाहिमालयौ गानेन निस्सरतः ॥

सोरठि ॥ ख ॥

गन्धर्व्व गान कर गगन दुंदुभि बाज, देव नारि सबे नाचे ,
रूपे गुणे आगरि त्रिभुवन नागरि , के नहि गोरि गोरि याचे ॥

॥ कोणभाषा ॥

हिमा , हे प्रिये हमर घर सर्व्व संपूर्ण विवाह जल लाइअ सेहे सार्थक ॥

मेना , ओहा हिलअ ॥ द्विको ॥

मेना , इन्द्रादि देवगण मँगैछ कन्या ॥

हिमा , ओहे शिखर गए विचार ॥

इति चतुर्थः सम्बन्धः ॥

॥ जमनीपट्ट दत्वा नन्दिभृङ्गि सहितः ऋषिः प्रविशति ॥

ऋषि , हे नन्दीश्वर , ईश्वर सन्नो दर्शन पुनु होएत की नहीं ॥

[उभौ , ऋषीश्वर अवश्य होएत] ॥

॥ महादेवो मालव रागेण प्रविशति ॥

कोणभाषा ॥

स्वराए जाएब ॥ द्विको ॥ आहाहा कहैन । [1]गौरीक रूप ॥

॥ महादेवो नन्दिभृङ्गिऋषीन् पश्यति ॥ सर्व्वमहादेवचरणे पतन्ति ॥

ऋषि , हे नाथ , अपने बड सानन्द स्वरूप देखइ छिअ[2] ॥

महा , हे ऋषिराज विस्तार कत कहब , ओहाञो हिमालय पाहि कन्या मागि
दिअओ , हमे विवाह करब ॥

ऋषि , मोर बड भाग्य सोञो जाई छञो ॥

---

1. प० पृ० सं०—१२; एवस०—१९क ।
2. 'छिअह' लीखि 'ह' केर माथ पर तीन गोट ठाड रेखा देल छैक । ई 'ह'क
   कटबाक संकेत लगैछ ।

॥ ऋषिर्गीतेन निस्सरति ॥

गोपीवल्लभ ॥ ग ॥

हरक चरित्र विचित्र पवित्र बसहु चढल गिरि आवे ।
हमहु जाएब गिरिराजक सन्निधि हे सुरगण सुख पावे ॥

कोणभाषा ॥

धन्य मोर भाग्य ईश्वरे मोरा के आज्ञा कएल ॥ द्विको ॥
हिमालयहुक धन्य भाग्य जन्हिका ठामे महादेव याचना करै छथि ॥

[महा , ऋषि हमे ओतए पठओलाह एहि मनोहर , ऋषि आश्रम
अनेक रहुब ,

उभौ , देवादेश प्रमाण] ॥

॥ जमनीपट्ट[1] दत्वा महादे[1]वो निस्सरति[2] ॥

इति पञ्चमः सम्बन्धः ॥

॥ गौरी सहितौ मेनाहिमालयौ मालव रागेण प्रविशतः ॥

॥ कोण भाषा ॥

हिमा , हे प्रिये एहि शिखर कहेन कहेन पुष्प सबे ॥

मेना , हे प्रभो आमोदे प्रमोद होइछ ॥ द्विको ॥

मेना , हे प्रभु अनेक अनेक रङ्ग फल सबे देखई छी ॥

हिमा , तेहि एखए अएलाहु ॥

हिमा , एहना रम्य स्थल खण एक विश्राम करु ॥

मेना , हे प्रभु जोग्य ॥

॥ ऋषिः पहडिया रागेण प्रविशति ॥

कोणभाषा ॥

हिमालयक बड भाग्य ॥ द्विको ॥ हिमालय पर विधाताक , बड कृपा ॥

॥ हिमालय ऋषिं दृष्ट्वा प्रणमति ,

हमरा कन्याविवाहक समय ओहाञो अएलाह बड भाग्य ॥

---

1. प० पृ० सं—१४; एवस०—१९ख ।
2. एतऽ छूट चिह्न दऽ ऊपरमे एकटा अक्षर छैक जे दुष्पाठ्य छैक ।

ऋषि , हे गिरिराज ओहाक । 'बड भाग्य , ते हमेंअएलाहु , परन्तु ओहाको वर केओ विचारलछ की नही ॥

हिमा , अनेक देवता मगई छथि , से व्यक्त नही कएल छए ॥

ऋषि , चतुर्द्दश भुवनक सृष्टि स्थिति प्रलय कर्त्ता देवाधिदेव महादेवश ओहाक कन्या मँगई छथि ते हमे अएलाहु ॥

हिमालयो विस्मितस्तूष्णीं तिष्ठति ॥

मैना , हे ऋषीश्वर , एहनि कहिनी ओहाए आजल छी , ओ मसान-वास भङ्ग ग्रास , वृषयान विषपान , हाडमाल बाघछाल , भूत सङ्ग प्रेतरङ्ग , कर कपाल व्याल हार , जटाजू(जू)ट विकट रूप , धूलि धूसर नामगात्र ईश्वर , एहना के कन्या के देत , कन्योने सावेषा(जे?) , ओ , विआह करए अओताह , किछु सुनु ॥

॥ मैनेक्ति गीतं ॥ पह[१]डिया ॥ दुहापरि ॥

कैसे आओत विआहक साज , नागट खमत तन्हि न लाज ॥

गजक चरम बाघक छाल , ओढिए धरिए कर कपाल ॥

भसम धवल सगर देह , गिरिसुता कैसे करति नेह ॥

नृपजगजोति एहेन भान , शिव छाडि तिनि लोक न आन ॥[२]

[गीतार्थं श्रावयति]

ऋषिष्कर्ण्णं हस्तौ दत्वा रोमाञ्चमभिनीय ,

[स्त्री जाति विविध भाँति , नीच गति , चपल मति , पाप पूर , धर्म्म दूर , बहुत बाज , किछु न लाज , रह न थीर , जनि समीर , अधिक ग्रास , न मान त्रास , नाखिक[४] बुद्धि , मन अशुद्धि , परम मूढ़ , हृदय गूढ़ , काकचेष्ट , कामपुष्ट , बोल सुहर , कर्म्म जहर , बामा नाम , कपट धाम , काम कोह , लोभ मोह , इत्यादि संयुक्त तोहे (?)

१. य० पृ० सं०—१५; एफस०—२०क ।

२. य० पृ० सं०—१६; एफस०—२०ख ।

३. नानारागगीत संग्रह, गीत —१५ । पाठान्तर— आवत, नागत ।

४. 'खि' पंक्तिक उपरसे लिखल अछि ।

[हे महाइनि , त्रैलोक्यनाथ महादेव के एहन बजई छह , शिव शिव शिव ॥] हे मेना तोहे स्त्री जाति , महादेवक स्वरूप का जानह , सुनह ॥

ऋष्युक्ति गीतं ॥ पहडिया ॥ ए ॥

गज बाघ चरम सोभए कत अङ्ग , भसम धवल कएल जारि अनङ्ग ॥

नागट उमत के जानत भेव , जन्हिक सरूप नहि बुझए वेद ॥

हुनि भल चिह्नु गिरिराज कुमारी , जन्हिलाइ भेलि जुगे जुगे तपधारी ॥

नृपजगजोति बुझावए[१]भाव , सबहि काल शिव शरण सोहाव ॥[२]

[गीतार्थं श्रावयति[३] ॥]

हे मेना अओरो सुनह , ॥

॥ ऋष्युक्तिगीतं ॥ केदारा ॥ प्र ॥

अपना सुतके सबे कह नीक , गुणि जन बुझए ऊन अधीक ॥

सुबुधि बुझाओब किछु न कलेस , अबुधिक मन हो हरि उपदेश ॥

स्वगुण प्रकाश कहैते नहि लाज , तकरा कहला कोदहु काज ॥

प्रसव वेदन गुरविनि पए जान , बाँझ न बुझ तकर अनुमान ॥

नृपजगजोति कह भेदिनि थोर , बुझनिहार एक नन्दकिशोर ॥

तोहर परम भाग्य , महादेव तोहर अर्थी होइ छथि ॥

[मेना , हे नाथ , जे जोगिभेष कए , अएलाह , सेहे नहि महादेव ॥

हिमा , हे सुन्दरी ओ अनादि ब्रह्मस्वरूप , हुनका के एहन नव(ा)गिअ , बिवाह नथम कय ॥][४]

हिमा , हे ऋषीश्वर ओहाक्ते सर्व्वश जे ओहाक इच्छा , ॥

ऋषि , हे गिरिराज , मोञे महादेव लेआए अनइ छओ ॥

१. य० पृ० सं०—१७; एफस —२१क ।

२. नानारागगीत संग्रह, गीत—१६ । भक्तिरस नचारी गीतं । पाठान्तर— बुझर, युगे जुगे ।

३. मूलमे 'श्रावयवति' अछि ।

४. ई अंश पत्रक नीचामे लीखि अन्तमे पंक्ति संख्या देल गेल छैक । परन्तु पत्रक तत्संबधक मूल पंक्ति में छूट चिह्न नहि देल अछि

ऋषि: (केदारा)[1] रागेण निस्सरति ॥

कोणभाषा ॥

ईश्वर कृपाए हमरा कार्य्यसिद्धि भेल ॥ द्विको ॥ ईश्वर कार्य्यसिद्धि होएत , ई कओन चित्र ॥

[हिमा , हे प्रिये विवाह कार्य त्वराए करु

मेना[2] , हे प्रभु करब ,]

मेना हिमालयौ जवनीपट्टं दत्वा निस्सरतः ॥

इति षष्ठः सम्बन्धः ॥

॥ ततो जवनीपट्टं दत्वा महादेवप्रविशत ॥

महा , हे नन्दीश्वर ऋषि का किए विलम्ब भेल ॥

नन्दी , मोञे द्वार भए , बाट हेरए छओ ॥

॥ तत ऋषि वासू , गीतेण(न) प्रविशतः ॥

[मालव ॥ चो ॥

तरुवर पात झरिए झरि दुर गेल , पुनु नव पल्लवे भेल ,
सती विओग हरहि हिय हारल ; होएत दुहु अवे मेल ॥
सकल मन सानद रे परिहरि अब किछु दंद ॥
दसहु दिस[3]]

॥ कोणभाषा ॥

(ऋषि) , त्वराए जाएब ॥ द्विको ॥ महादेवक चरण बन्दना करब गए ॥

नन्दी , ऋषिदृष्ट्वा वदति ॥

हे ऋषीश्वर ओहाहिक पथ हेरइते छलाहु त्वराए भीतर चल ॥

ऋषि , जे आज्ञा ॥

१· ध० पृ० सं०—१८; एबस-२१ ख ।

२. 'मेना' शब्द एहठाम छूटल छैक तें सूढ चिह्न दऽ कऽ ओहूसँ ऊपरमे लखल छैक ।

३. गीत अपूर्ण अछि ।

॥ ऋषिर्म्महादेवं दृष्ट्वा कृताञ्जलिः स्तौति ॥

[1]॥ श्लोकः ॥ अश्वमेध सहस्राणि , वाजपेय शतानि च ।
महेशार्च्चन पुण्यस्य , कला नार्हन्ति षोडशीं ॥

[श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराजनन्दन , शशिशेखरसिंह कएल , ओहाक भक्ति गीत एक गबै छी ॥]

॥ धना ॥ चो ॥

तोहर कृपाए रहु दश दिकपाल , मोञे कि कहब हर तोहहि कृपाल ॥
हर विनति हमार सरण तोहार ॥ ध्रु ॥
महिमा तोहर कहब कओने भती , जनमे जनमे शिव तोहे पए गती ॥
अलपहु भगति होअइ परसने , आक धुथुर फूले पुज सबे जने ॥
सीर मंदाकिनि शशधर भाल , बाघ चरम ओढ़ भूषण व्याल ॥
सिधि निधि दाता जगत किसान , शशिशेखर केसरि एही भान ॥]

महा , हे ऋषीश्वर , कओन वार्त्ता ॥

ऋषि , अविलम्ब प्रयाण करँ ॥

॥ सर्व्वे मिलित्वा गीतेन निस्सरन्ति ॥

मल्लारी ॥ प्र ॥

वसहु चलाओल समीरण जीनि ,
पाँच वदन हर लोचन तीनि ॥

कोणभाषा ॥

महा , हे ऋषीश्वर , एहने वेगे अओरो किछु चलु ॥

ऋषि , जे आज्ञा ॥ द्विको ॥

ऋषि , हे नाथ एहा सओ, ओहो विवाह मण्डप देखइ छी ॥

महा , मधुरहासेन ऋषि विलोकयति ॥

इति सप्तम. सम्बन्धः

---

१. ध० पृ० सं०—१९; एबस०—२२क ।

॥ सपरवारो हिमालयों जमनीपट्टं दत्वा प्रविशति ॥

हिमा ¸ हे मेना ¸ विवाहक लग्न निकट आएल ¸ ईश्वर नहि अ'एलाह ॥

मेना, ओहाञो ओहने वर जोहल ॥

[मेना ¸ हे दायिलोकें गौरीक पसाहनि करु ॥

विधि ¸ मैञो ओहे करै छी, गौरीमुद्दिश्य,

ए बेटिआ एतए आउ ¸ पसाहनि करब ॥

गौरी ¸ अएलाहु ॥]

आसावरी रागेण महादेवश्चप्रविशति ॥

कोणमाषा ॥

महा ¸ हे ऋषीश्वर बड रम्य स्थान ¸ ॥

ऋषि ¸ गौरीक गुणे ॥ द्विको ॥

[ऋषि ¸ हे ईश्वर ¸ विलम्बि चलु ॥

महा ¸ ऋषि उत्तम कहर ॥]

हिमा ¸ प्रिये ¸ कुसुम वृष्टि होइछ ¸ स्वर्ग अनेक दुन्दुभि वाद्य बजइछ

मोरे भाने महादेव अएलाह ¸ मोञे आगु गए लेआए अनबाह ॥

हिमालयो गत्वा महादेवं राजोपचारैस्संपूज्य गृहमानयति ॥

हिमा ¸ हे ईश्वर बड भाग्य मोर ¸ ओहाक चरण कमल देखल (मोञो

राजोपचार पूजा करै छञो ॥)

॥ महादेवः सलज्जमधोमुखस्तिष्ठति ॥

[हिमा ¸ हे ऋषि पुङ्गव, ईश्वर सहिते ¸ विवाह मण्डप विजय करु ॥

वासु ¸ अट्टाट्टहासेन हसति ॥

तत्र मण्डपे ¸ ॥]

हिमा ¸ लग्न निकट आएल विलम्ब जनु करिअ ॥

ऋषि ¸ हे गिरिराज ¸ विलम्बक अवसर नहीं ॥

---

१. य० पृ० सं०—२०; एक्स—२२ ख ।

हिमा ¸ हे ऋषीश्वर सबे सामग्री उत्पन्निए अछि ॥ ।]

[1]ततः कङ्कण बंधनं ॥

ऋषि ¸ हे ईश्वर ¸ पहिले पाद प्रक्षालन करु ॥

महा ¸ अवश्य ॥

ऋषि ¸ हे गिरिराज ¸ कथरि ¸ मूसर ¸ साठी धान ¸ पिअर सूत ¸ आम्रक पात आनि दि(अ)[२] ॥

[[ ] १ माष धनाश्री ॥ चो ॥

जय जय मल २ ॥ ध्रुवं ॥

पिअर सूत बेढव नव जना ¸ ए विधि सोहथि विआह रचना ॥
हर कर कंकण प्रथमहि फेर ¸ विहुसि विहुसि मुनि मुख सबे हेर ॥
हर कर कंकण दोसर फेर ¸ आठहु जना आठ दिस घेर ॥
हर कर कंकण तेसर फेर ¸ देखितहि सब (मन) दुख दुर गेल ॥
हर कर कंकण चारिम फेर ¸ सुरगणे कुसुम वृष्टि काए देल ॥
हर कर कंकण पाचम फेर ¸ किनर कौतुक गावए लेल ॥
हर कर कंकण छठम फेर ¸ हरखित देवनारि सब खेल ॥
हर कर कंकण सातम फेर ¸ एकहि असोक कुतूहले ठेल ॥
हर कर कंकण आठम फेर ¸ सकल सुरासुर आनन्द भेल ॥
साठिक चाउर आंबक पात ¸ कंकण बाधब शंकर गात ॥
नृपजगजोतिमल्ल कौतुके गाव ¸ लाख एक दुइ बुझए भाव ॥[३] [ ]]

॥ ऋष्युक्ति गीतं ॥ आसावरी खर्ज ॥

कौतुक एक बड भेला ¸ जखने महादेव वेदी गेला ॥
जटा हलु अँकुसि लाई ¸ खिकहते सुरसरि (गेलि) बढिआई ॥

---

१. य० पृ० सं०—२१; एक्स०—२३ क ।

२. एहि ठाम (पत्रक द्वितीय पंक्तिमे) छूट चिह्न देल छैक किन्तु पत्रक कोनो कातमे सन्दर्भ सङ्कत छूटल अंश लिखित नहि छैक । वस्तुतः एहि सन्दर्भक एकटा सम्पूर्ण गीत एक्स०—१क पर अछि जे 'एक' अङ्क सन चिह्न दऽ कऽ आरम्भ कयल गेल अछि । अतः एक्स—१क केर गीत (जे सौंसे पत्रमे अछि) एतऽ य० पृ० सं०—२१; एक्स०—२३कमे द्विकोष्ठमे निबद्ध कऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।

३. एक्स१क अन्तर्भुक्त ।

वसहए हलु कुश खाई , लावा देखि फनि उठल फोफाई ।
छावा भासल जाई , भूखल वासुकि खिछि खिछि खाई ॥
बाघ छाल भासल जाई , फणि फुफुकारे वसह विघुआई ॥
विद्यापति कवि ईश धुमाउ , रुपनरायण होथु चिराउ ॥[2]
ईश्वर चरित्र जेहि तेहि भाँति सुन्दर ॥

(मेना ,) [हे ऋषीश्वर हमरो गोचर सुनु ,] ॥

॥ मेनोक्ति गीतं ॥ मालव ॥ ख , ए , [चो] ॥

पञ्चबान ।[१] न पुरमथन भयङ्कर शंकर नाम कवने धरिआ,
तिनि नयन हर एक हुताशन न जानए कुल कवन अवतरिआ ॥

१. ई गीत परिवर्तित रूपमे मिथिलामे प्रचलित अछि। प्रचलनमे एकर दुइ गोट रूप अछि।

(क) कवीश्वर चन्दाझाक सङ्कलन, गीत—१६ ।

चानन भरल बटाय । उमत सदाशिव भसम लोटाय ॥
मनाइनि देखिय जमाय । हम नै परीछब एहन जमाय ॥
गरौं देल दोपटा लगाय । उर फनिपति उठलाह फुफुआय ।
जटा देल अँकुशी लगाय । शिर सुरसरि जल गेली बढ़िआय ॥
वेदी देल लावा छिड़िआय । भूखल वासुकि चुनिचुनि खाय ॥
सुकवि विद्यापति गाय । हर परतन वर गिरजा पाव ॥

(ख) मिथिलागीतसंग्रह, खण्ड—१; मित्र-मजुमदार, गीत—९०३ ।

हे मनाइनि देखहु जमाय ।
शिवक माथ फुटल जटा । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
जटा देल अँकुशी लगाय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
झिकितहि सुरसरि गेल बहराय ।
वेदी देल लावा छिड़िआय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
भूखल वासुकि खिछिखिछि खाय ।
बट्टा भरि घोरल कनाय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
उमत महादेव भसम लगाय ।
भनहि विद्यापति गाओल । आगे माइ गौरिसहित वर कोबर जाय ॥

२. ध० पु० सं०—२२; एक्स-२३ख ।

माए न बाप साप संगे खेलए मेलए भसम दिगन्त भरी ,
मनमथ मारि नारि आलिगअ उमत बुझाएब कओन परी ॥
[पावन गंगा मथा जदि धोवहि गोवहि काइ जटा बिष(ष ? ,नी ,
संसय तोरि दे गोरि बुझावए इथि अनुचित अनुचित अपनी ॥]
भनइ विद्यापति सुनह मनाइनि कओने बुझाओत जगत गुरु ,
राजा शिवसिंह रुपनरायण सकल याचक जन कल्पतरु ॥
हे ऋषीश्वर , महादेवक अति विचित्र चरित्र बुझिगहि जाइ छए ॥[1]

[[ ] १ बरारी ॥ , ॥

विहित विवाह उपारब , मृगमद चन्दन गारब ,
माइ हे , उबटन साजब रे ॥
ई सबे हुनि न सोहाबए , आक धुथुर पथ भावए
माइ हे , आंग भसम लावए रे ॥
विषम भुजगमय भूषण , अओर कहब कत दूषण ,
माइ हे , साखब अनुसन रे ॥
आंखब नयन कओने भाँति , पसरने सुरुज अनल काँति ,
माइ हे , कर मोरा होअ साँति रे ॥
नृप जगजोतिमल भाने , ओहि हर सबक सिदाने ,
माइ हे , जगजन जाने रे ॥

॥ सर्व्वैमिलित्वा कौतुकागार गीतं गायन्ति ॥

धनाश्री ॥ प्र ॥

शिवे सिरिजल एहे त्रिभुवन , त्रिभुवन धारण कारण ॥
जय जय मङ्गल सर ॥

१. एहि ठाम वक्ररेखा जकाँ विचित्र छूट चिह्न बनाओल अछि ।
एक्स०-१२ क पर 'एक' अङ्क सन छूट सङ्केतक चिह्न दऽ 'बरारी' रागमे एक गोट गीत अछि जे ओहि पत्र पर पाँच पंक्तिमे सम्पन्न भेल अछि। ओहि गीतक प्रसङ्गसँ निश्चय होइछ जे एही स्थलक छूटल गीत थीक। अतः ओहि गीतकेँ एतऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि।

२. एक्स० १२क केर पहिल पाँच पंक्तिक गीत एतऽधरि कोष्ठद्वयमे निबद्ध कऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।

फणिमणि शोहित सुन्दर, सुन्द[1] र धवलमहेशर
अनल चाँद रवि लोचन, लोचन देखि दुख मोचन ॥
धरिए अभय वर दुइ कर, दुइ कर त्रिशूल डमरु कर ॥
नृपजगजोति गाव कोवर, कोवर गाने पापहर ॥

महा, हे गिरिराज हमे पूर्ण्ण मनोरथ भेलाहु[2] अतएव, हमरा अनुज्ञा दिअओ, हमे आश्रम जाओ ॥[3]

(हिमा,) [[४ हे नाथ, मोरा किछु गोचर करैं छओं।

॥ हिमालय मेनोक्ति गीतं ॥

मालव ॥ चो ॥

तुअ पद जोर, सकल सुरासुरे वन्दिअ,
कि पुर आशा, सदय हृदय होहे दिगवासा ॥
विनव मनी ओरे, गोरि, मोरि प्रतिपालवि,
कि जत जिव, सवहि देआपित सोहे शिव ॥
गिरि पर मोर, गगन गरज सुनि हरखए,
की जैसन, तहेन देखि हमे चिनवन ॥
अविनय मोर, जे किछु पड़ल मोर,
सेहे सबे, की अविरल, खेमह कृपा कए, विसेसर
आनन्दे मोर, अथोर पुलके पुर तनु मोर,
की निज मति, भनए जगति नृपजगजोति ॥

गीतार्थं भावयति ॥ ॥[4]]]

हिमा, हे ईश्वर, ओहाओ चतुर्द्दश भुवनक अधिपति, जहेन इच्छा हो ॥

---

१. प० पु० सं०—२३; एवस—२४ क।
२. एहि ठाम छूट चिह्न (,) ओ चिह्नक ऊपर मे '४' अंक देल छैक।
३. एतहु (') एहन छूट चिह्न अछि। आगा २४ ख पर लिखित वाक्य ओ गीत एहि वाक्यक बादे समीचीन अछि।
४. प० पु० सं० —२३;एवस-२४कमे छूटल हिमालयक गद्य कथन एवं गीत एवस —२४ख पर 'चारि' अंक लीखि कऽ अंकित अछि। अतः ओहि समस्त अंशकें कोष्ठ द्वयमे निबद्ध कऽ प० पु० सं० —२३, एवस —२४कमे एतऽ धरि अन्तर्भुक्त कऽ देल गेल अछि।

॥ महादेवस्सगणो गीतेन निस्सरति ॥ देशाख ॥ ए ॥

विहित विवाह काहि नहि होइ,
जनमे जनमे हर[1] गौरिहि सोह ॥

कोणगाथा ॥

महा, हे पार्वती, ओहाओ अबला, एहि बसह चढि लिअओ ॥

गौरी सलज्जं मधुरं विलोकते ॥ ढिको ॥

ऋषि, हे ईश्वर[2], गौरी राजकन्या, अति कोमल, नहु नहु चलु ॥
महा, हे ऋषीश्वर सर्व्वथा ॥ ॥
मेना, हे प्रभु गौरी विनु उद्वेग बड़ होईछ ॥
हिमा, ओ त्रैलोक्यनाथ ॥
मेना, हे प्रभु हमर गोचर सुनु ॥

॥ मैनोक्ति गीतं ॥ सौहै ॥ प्र ॥ ए ॥

मल शिवशंकर भोरा, बुझल जतीपन तोरा, अति गोरा लो ॥
तपोवन अछल तपसी, भिकह सकलगुण रसी, शिर शशी लो ॥
जप तप सबे दूर गेला, रमणि रङ्ग मन देला, इ कि भेला लो ॥
कपट बोलथि मधुवानी, हरलन्हि मोरि भवानी, अति ज्ञानी लो ॥
कोथहि रुण्डेरि माला, पहिरथ बाघेरि छाला, फणिमाला लो ॥
विष्णुपुरी शिवदासे, परिपूरथु मोर आसे, चिरवासे लो ॥

[3]हिमा, ओ ईश्वर त्रैलोक्यनाथ, तुनक चरित तोहे की जानहु, मल ठाओ हमरा कन्या भेलि, ईश्वरे स्नेहे अर्द्धशरीर, कैलि छिअथि से मोओ कहै छओ सुनु ॥

॥ हिमालयोक्तिगीतं ॥ धनाश्री ॥ [प्र] एर्ज ॥

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारी, जय अधपुरुष जय अधनारी ॥
आध धवल वर आधा गोरा, आध वाघ छाल आध पटोरा ॥

---

१. 'हुस' एवं 'हस' सेहो पढल जा सकैछ।
१. प० पु० सं०—२४; एवस—१ख।
२. प० पु० सं०—२५; एवस—२क।

आध योग आध भोग विलासा , आध पिनाक आध नगवासा ॥
आध हार माल आधा मोति , आध चन्दन शोभे आध विभुति ॥
आध चाँद आध सिन्दुर सोहे , आध विरूप आध जग मोहे ॥
भने कविरतन[1] बिधाता जाने , दुइ कए बाटल एक पराणे ॥[2]
हे मेना , गौरी विवाह सम्पूर्ण भेऽल , अःतपर , हमरा अन्तःपुर जाऊ ॥

मेना , हे प्रभु , एहने योग्य ॥

---

१. मूलमे 'कविरतन'केँ पंक्तिक ऊपरमे दुहू दिससँ लम्बरेखासँ घेरि कऽ पत्रक अधोभागमे 'विद्यापति' विकल्प पाठ देल गेल अछि, किन्तु 'विद्यापति' रहने छन्दोभंग भऽ जाइछ ।

२. ई गीत 'नेपालपदावली'मे भणिता-विहीन गीतरूपमे भेटैछ । गीत द्रष्टव्य थिक—

जए जए शङ्कर जए त्रिपुरारि जए अधपुरुष जए अधनारि ॥ ध्रु ॥
आधा धवल आधा तनु गोरा आध सहज कुच आध कठोरा ॥
आध हडमाल आधा मोती आध चन्दन सोभे आध विभूती ॥
आध चेतन मति आधा भोरा आध पटोरे आध मुज डोरा ॥
आध जोग आध भोग बिलासा आध पिनाक आध नगवासा ॥
आध चान्द आध सिन्दुर सोभा आध विरूप आध जग लोभा ॥

—विद्यापति पदावली, भाग—१, पृ०-३७५—७६, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना ।

येह गीत रागतरङ्गिणीमे धनछी रागक शास्त्रवी प्रभेदक उदाहरणमे कविरतनक भणिता युक्त भेटैछ । रागतरङ्गिणीमे पाठान्तर कम अछि किन्तु जे अछि से विशेष ध्यान देबा योग्य । रागतरङ्गिणी (पृ० १०५) क गीत निम्न रूपक अछि—

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारी । जय अध पुरुष जए अधनारि ॥
आध धवल तनु आध तनु गोरा । आध पटोर आध मुज डोरा ॥
आध जोग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥
आध सिन्दुर बिन्दु आध विभूती । आध हार माल आध गजमोती ॥
भने कविरतन बिधाता जाने । दुइ कए बाँटल एक पराने ॥

३. घ० पृ० सं०— २६; पृष्ठ—२ख ।

मेना हिमाल[यौ] गीतेन निस्सरत: ॥

मालव ॥ख॥

शिवक सरूप मुनिहु नहि जानी ,
एक ओहे जानथि गोरि भवानी
शिव के चरण शरणं ॥ ध्रु ॥

॥ कोपभाषा ॥

(हिमा ,) हे मेना , धन्य मोर भाग्य , चतुर्दश भुवनाधिपति श्रीमहादेव जमाता ,

मेना , ईश्वरहि कृपाञो ॥ द्वितीय (कोपे) ॥

हिमा , धन्य मोरि कोखि , जथि भवानी जन्म लेल ,

हिमा , तञि भवानीशंकर स्मरण करैते , रहब गए ॥]

इत्यष्टम: संबन्ध: ॥

॥ ऋषिगौरी सहितो महादेवो वराठी रागेण प्रविशति ॥

कोपभाषा ॥

महा , हे ऋषीश्वर , ई बागवती नदी अति पवित्र हमरा हृदय सञो ई बहिर्भूति भेलिह ॥

ऋषि , अति सुशीतल जल ॥ द्विको ॥

ऋषि , हे ईश्वर , ओहाञो पशुपति नामे , कओन , ठमा रहिअ ॥

महा , एहे अएलाहु , ये ठमा ॥

महा , हे ऋषीश्वर , ई हिमालयक प्रत्यन्त पर्व्वत ई नेपाल मण्डल अति पवित्र , तथुहु ई बागमती नदी , ई पशुपति स्थान , ई गुह्येश्वरी पीठ , ई पृथ्वीहि सार थी[क] ॥

ऋषि ‚ हिमाद्रे स्तुङ्ग शिखरा ‚ त्प्रोदभूता वाग्वती नदी ।
भागी[1]रथ्या: शतगुणं ‚ पवित्रं तज्जलं विदुः ॥
गोकर्णेश्वस्य च प्राचीतः ‚ पशुतेरुत्तरेण च ।
तत्र स्नात्वा हरेर्लोकं ‚ मुपस्पृश्य जलं तथा ॥
त्यक्त्वा देहं नरो याति ‚ ममलोकं न संशयः ।
सवन्तीनां वरा पुण्या ‚ वाग्वती सर्व्वतो मना ॥

ओ सबहि वचने ‚ वराह पुराणादि जकर माहात्म्य कहलछ ‚ से नेपाल मण्डल वहै थी(क) ॥

महा ‚ बेहे ॥

महादेवो गौरीप्रति

हे गौरी हमाका वैमनस्य सन देखइ छी कहेने ॥

[गौरी ‚ वैमनस्य कहू छओ ॥]

॥ गौर्य्युक्ति गीतं ॥ वराली ॥ प्र ॥

जमा किने गमावति गोरि ‚
सकल संपति मइ ओहि अएलहु ‚ पावल भसम झोरि ॥
न घर संवर न पिठि अंबर ‚ न मिल पैच उधारे ‚
तनय चातुर भूखे वेआकुल ‚ किने गये देव अवारे[2] ॥
वासुकि जीउत पवन पिउत ‚ हरे जीउव विष खाई ‚
सेवक स्वामी दुहु भल मिलल ‚ हमर कओन उपाई[3] ॥

---

१. य० पृ० सं० — २७; एवस- १क ।
२. य० पृ० सं० — २८; एवस० — २ख ।
३. 'उपाई' मे 'प' अक्षर पर छिद्र जकाँ छैक ।

पेट पटकल गाल चोटकल ‚ पाकल भौंहेरि गोछी ‚
ताहि बुढा हाथ ओ विहि देलहु ‚ ते मए पापिनी ओछी ॥
माइ न सोचल बापे न खोजल ‚ खोजल दैव अपने ‚
विहिक लिखल मेटि न पाथए ‚ झाखिए मनहि मने ॥
भने विद्यापति सुन पारबति ‚ ओ वर त्रिभुवन देवा ‚
जगत ईसर सामि तोहि मिलु ‚ कर जोरि कर सेवा ॥[1]

गीतार्थ श्रवयपति ॥

महा ‚ हे प्रिये ई हमरा खाहुजिके थी(क) ‚ कीनु निमित्ते कोध किए करै छी ॥

---

१. एहि गीतक प्रसंग, भाव आ कतोक पंक्तिसँ साम्य रखैत विद्यापतिक एक गीत लोककंठमे अछि जकर संकलन कवीश्वर चन्दाझा कयने छलाह : गीत निम्नरूपक अछि —
जकर नगर एते पुर पाटन से कोना सुतै निचिन्त गे माई ।
खेती न करथि भिखि न मांगथि बालक भोजन चाही गे माई ॥
नै घर अम्बर नै घर सम्बर नै घर पैंच उधार गे माई ।
एक दिना सुख सहलो न जाइक मासक मास उपास गे माई ॥
कोदो आनि पथार जे देलनि बाघक छाल ओछाय गे माई ।
गौरी सोहागिनि जल लै गेली फूजल बसहा खाइ गे माई ॥
पाँच मुहेँ शिवशङ्कर जेमथि छौ मुख जेमथि बेटा गे माई ।
सहस्रकला लय वासुकि जेमथि केओ न कहै भरि पेटा गे माई ।
वासुकि जीवथि पवन पिवथि शङ्कर जहर खाय गे माई ।
स्वामी हमर एहि विधि सेवथि हमर कोन उपाय गे माई ॥
भनहि विद्यापति सुनु ए मनाइन बड़ आनि सेवा कयल गे माई ।
एतक सुख दुख एतहि सेपब ओतक कोन उपाय गे माई ॥

चन्दाझाक संग्रह, गीत — ४९

॥ महादेवोक्ति गीतं ॥ गुर्ज्ज ॥ प्र ॥

अवनत न कर रे धनि आनन चन्दा ,
लोचन युगल रे मोर होअओ आन[1]/स्पन्दा ॥
न कर न कर रे धनि अपद रोसे ,
कहह मानिनि रे मोर किदहु दोसे ॥ ध्रुवं ॥
अधर कोमल रे नव पल्लव भासे ,
मलिन न कर रे खरतर निसासे ॥
विरह दहन रे वह देह कराला ,
देह हुतासन रे धनि मालति माला ॥
चतुरचतुरभुज रे मन मिलो गेआने ,
सुन कलामति रे पिआ विना ए माने ॥[2]

गौरी , हे प्रभु मोञो कत कहब ॥

॥ गौर्य्युक्ति गीतं ॥ राजविजय ॥ चो ॥

तपसिआ मोरे सने कैसो न भिखारी , पवलह राजकुमारी ॥ध्रुवं ॥
तपसिया मोरे मुख हेरि हसे , तोरा मुख कत रूप बसे ॥
जटाजूट फोट गोट चन्दा , आनि जानल पूरि फन्दा ॥

---

1. एहि ठाम पंक्तिक अन्तमे लम्बरेखामे तीन टा बिन्दु देल छैक ।

2. ग० पृ० सं०—२९; एक्स—४क ।

3. रामभजन संग्रह (गीत-५)मे ऐह गीत "मल्लार" रागमे देल अछि । 'ध्रुवं' शब्द नहि अछि । पाठान्तर नहि । ऐह गीत द्रष्टव्य—चतुरचतुर्भुज एवं गीतसप्तशती, गीत संख्या—१३ ।

फूल तीरल मद आवे , सेओ भेल वसहक घावे ॥
विष्णुपु[1]री हेन भाने , ओहि जोगि जगत किसाने ॥[2]

[महा ॥ हे प्रिये सुनह ॥

[[[3] आसावरी ॥ चो ॥

---

1. ग० पृ० सं०—३०; एक्स ४ख ।

2. एक्स०-४ख पर एहि ठाम छूट चिह्न दऽ कऽ पत्रक उपरका भागमे लिखल अछि—महा , हे प्रिये सुनह ॥ आसावरी ॥ चो ॥ ओहि दिन-दिन होअ खीन ॥ गीतार्थं भावयति ॥ गौरी , इहाक त्रैलोक्य अधीन , किछु विशारेत मोने ॥ ॥ कानरा ॥ पुरि ॥ द्विज जुवती हर' । एक्स—१२क पर पाँच पंक्तिमे एकटा गीत सम्पन्न कऽ छठम पंक्तिसँ '॥ आसावरी ॥ चो ॥' दऽ 'ओहि दिने दिने होअ खिने'सँ एकटा गीत आरंभ होइछ जे एक्स—१२ख पर छठम पंक्तिक मध्यमे संपन्न होइछ । एक्स०—१२क पर रागोल्लेखक पश्चात् तथा प्रस्तुत गीतक आरम्भसँ पहिने छूट चिह्न दऽ पत्रक नीचाँमे छैक 'कि कनकलता अरविन्दा' । एक्स—१२ख पर छठम पंक्तिमे '॥ कानरा ॥ प ॥' दऽ 'द्विजजुवती हर' सँ गीत आरम्भ होइछ । किन्तु एहिठाम छेड पंक्तिको गीतक चारि चरण मात्र अछि । एहु गीतमे 'द्विज' शब्द पर छूट चिह्न दऽ कऽ अधोभागमे लिखल अछि 'निन्दति चन्दनमिन्दु किरणं ॥' ग० पृ० सं०—३०; एक्स०—४ख पर संकेतित एवं एक्स० –१२ क-ख पर पल्लवित अंशकेँ ग०पृ०सं० —३० मे अन्तर्मुक्त कयल गेल अछि ।

3. ग० पृ० सं०-३०; एक्स०–४ खमे अन्तर्मुक्त एक्स०–१२क केर अन्तिम दुइ पंक्ति ।

[कि कनक लता अरविन्दा]

(आसावरी ॥ चो ॥ ?)

ओहि दिने दिने होअ खिने , कबहु न पोअए कलङ्क मलिने ,
पुर भेले गरसिअ तमे , हरि न होअ तुअ आनन समे ॥
पुरहु मनोरथ गौरी , सर ॥]

---

१. ई पवित कोनो स्वतन्त्र गीतक सङ्केत लगैत अछि। कारण आगाँ जे गीत अछि तकरा सङ्ग एकर सङ्गति बैसैत नहि अछि। सम्भव अछि एहि गीतक पूर्णरूप कोनो स्वतन्त्र पत्रमे देल गेल हो आ ओ पत्र वर्त्तमान हस्तलेखसँ विच्छिन्न भऽ कऽ हेरा गेल हो। रागतरङ्गिणी (पृ० ७६-७७)मे 'भोगिनी असावरी' रागक उदाहरणमे 'कविरतनाञ्जी'क एकटा गीत अछि जकर आरम्भ 'कनकलता अरविन्दा'सँ होइछ। एहि गीतमे नायिकाक रूपक बड़ विलक्षण वर्णन भेल अछि। वर्त्तमान प्रसङ्गमे महादेवो गौरीक रूपातिशयताक वर्णन कयलनि अछि। अतः 'कविरतनाञ्जी'क उल्लिखित गीत एहि ठामक हेतु पूर्ण उपयुक्त अछि। 'कविरतनाञ्जी' ओ 'कविरतन'केँ अभिन्न मानल जाइत छनि। कविरतनक अर्द्धनारीश्वर वर्णनात्मक गीत एहि नाटकमे पूर्वँ प्रयुक्त भेल देखल गेल अछि। अतः नाटककार द्वारा कवि रतन (रतनाञ्जी)क दोसरो गीतक प्रयोग करबामे कोनो असङ्गति नहि लगैछ। कविरतनाञ्जीक ई चर्चित गीत निम्न रूपक अछि—

कनकलता अरविन्दा मजनो मौजरि छवि गेल चन्दा ॥
केओ बोल भमर भमरा केओ बोल-नहि नहि चलय चकोरा ॥,
केओ बोल सँवलें बेदला केओ बोल नहि नहि मेघ मिलला ॥
संसार पर जग नहीं (केओ) बोल तोर मुख सम नहीं ॥
कवि रतनाञी भाने सङ्क कलङ्क दुअओ असमाने ॥
मिलु रति मदन समाजा देवल देवी लखनचन्द राजा ॥

वनहि वस[१] ए अहनीसे , तृण कर लोभे फिरए दह दीसे ,
ओहि नहि मनमथ वाणे , हरि नहि तोहर नयन समाने ॥
एकहि करए महु रावे , मदन वेआपि सबहि मन तावे ,
कि कहब तोहहि सआनी , हरि तह नहि होअ तुम सम वाणी ॥
दाव अनल ओहि दाहे , नागर जन ओहि नहि अवगाहे ,
करे न करए ताहि कोइ , हरि नहि कामिनि कुच सम होई ॥
चान्द हरिण पिक गिरी , तुअ तनु शीतल चारहुक चिरी ,
नृपजगज्योतिमल भाने , सबहिक सङ्कर कर समधाने ॥[२]]]

गीतार्थ श्रावयति ॥

गौरी , दहाक त्रैलोक्य अधीन् किछु विशप्ति मोरी ॥[३]]

[[॥[४]कामरा ॥ प ॥

[निन्दति चन्दनमिन्दु किरण ॥[५]]

द्विज युवती हर गोपि कपटे धर , अनेक भाति फुल सूले , ,
त्रिभुवन नाथ , भूतगण साथ , न हरि हरि तुअ तूले ॥[६]]]

महा , हे पार्वति [दहाक आनन्दे][७] [एहिनो ठाँव] मोरा नृत्य करएक मन होइछ ॥

---

१. एवस०—१२ ख केर साढ़े पाँच पङ्क्ति।

२. एकरा पश्चात् कोनो अङ्क दऽ दु पासी देल छैक।

३. ई वाक्य एवस—४ ख केर ऊर्ध्वभागमे अछि जकर उल्लेख पूर्व भेल अछि।

४. एवस०—१२ ख केर डेढ़ पङ्क्ति।

५. ई चरण अन्न उद्धृत गीत थीक वा स्वतन्त्र गीतक प्रथम पङ्क्ति-सङ्केत ?

६. ई गीत एतबेटा अछि वा अपूर्ण से शङ्का कयल जा सकैछ।

७. एहि ठाम (‸) एहन छूट चिह्न देल छैक आ तकरो बीचमे छूट चिह्न देल छैक। एवस०—४ ख केर ऊर्ध्व भागमे पूर्वोद्धृत छूटल पङ्क्तिकसँ ऊपर लिखल छैक 'दहाक आनन्दे' तथा छूट चिह्न वाला पङ्क्तिक सोझे पत्रक दहिन भागमे तिरछा कऽ सूक्ष्म अक्षरसँ लिखल छैक 'एहिनोठाँव'।

॥ महादेव नृत्यगीतं ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

गोरी भरमे अमिए बम चन्दा, बाघ जिविए रे बसहृ कर दन्दा ॥
कओने परि होएत नाट निरबाहे, परम वेआकुल त्रिभुवन माहे ॥ ध्रुवं ॥
शिरे सुरसरि भरे गेलि बड़िआई, नयन हुताशन परते मिझाई ॥
समरि ससल फणि दिशि दिशि धुरे, तह्निके ऊपरे बस कातिक मयुरे ॥
सुकविसदानन्द निशे कर सेवा, देथु अभय वर शंकर देवा ॥

गोरी, हे ऋषीश्वर, ईश्वर नृत्य देखि, हमराहु नाचएक मन[1] [(उत्साह)] होइछा।

ऋषि, हे पार्व्वति, ओहाञो ईश्वरक अर्द्ध शरीरक उचित।

॥ गौर्य्युक्त गीतं ॥ मेघमल्लाल ॥ श्र ॥

गान मृदङ्ग, तान ताल रव, धुं ध उघट ताहा देई,
ईसर सपुत, मण्डल नाचत, किमरि इ सुख लेई ॥
थेडि डि तकडि डि, देडि कि तकडि डि, टकनकता ॥
हर नाचए र तत्त थेइ र तत्त थेई ॥ ध्रु ॥
नाद सरूप आन एक ईसर, सुनि जन सुखक निवास,,
दुखि जन दुख हर देअ परमपद, सब मन हो परगास ॥

थेटक

[न कथे एता, ता: टकनक तातः, साथं गादे थ गायेइता ॥
हरना ॥
एहि असार संसार सार एक शिव पद पंकज जोर,
महिपति जगजोति भनए भगति नित एहि जनु कैओ होअ भोर ॥
धेडिडि फनि धेधेना, टघेडिडि फनि टघेना
टघेना रघेना घे गधें दाति[2] ॥]

---

२. 'नाचएक मन' एहि दु शब्दके ऊपरमे तुनू कातसं लम्बरेखासं घेरि ओहो सोला पत्रक अधोभागमे वैकल्पिक पाठ 'उत्साह' देल अछि।

१. व० पृ० सं०—३१; एक्स०-५ क।

२. एहि गीतक मृदङ्गक बोलयला अंश उडकल आ लेपायलसन रहने पढ़बामे अत्यन्त कष्टकर अछि।

महा, हे प्रिये, साधु साधु, हमरा परिश्रम बड़ भेल, अतएव तन एक जुआ खेलाहु ॥

गौरी, ईश्वर सर्व्वथा ॥

॥ मालव ॥ थए ॥

शशधर डमरु बसहृ बघछाला, गांग पिणाक बलए जपमाला ॥
जत जत जीतवे आइल आनी, सबहि बे[1]रि सबे जिनल भवानी ॥ ध्रुवं ॥
आइल सरबस सबे देल हारी, पुनु [पुनु] जोहिअ छूछि अधारी ॥[2]
आध शरीर हरल हरे हारी, सेहओ जिनल गिरिराज कुमारी ॥
तखन लजाए रहल शिरनाई, हर आलिंगल हरषि मनाई ॥
जुगुत जुआरी गोविन्द मासा, गोरि सहित हर पुरथु आसा ॥

महादेवश्चकोपं कृत्वा, तत्रैव कोणान्तरे तिष्ठति ॥

ऋषि, हे पार्व्वती महादेव मनोदुःखे बैसल छथि गए मनावहृ ॥

गोरी, हे ऋषीश्वर सुनु ॥

॥ गौर्य्युक्ति गीतं ॥ आसंय ॥ अति ॥
भनि भनि पुछे गोरि देहु उपदेशे, माहहे,
कि देव अखाडव रुसर महेशे ॥

खाट तुरैया सेज हुनि न सोहावए, अतहु कतहु बाघ छाल ओछावए ॥
क्षीर कर्पुर पान हुनि न सोहाव, आक धुतुर फुल तहि मल भावे ॥
विष्णुपुरी कहे, हित उपदेशे, हाथ कर्शिण बांध बूढ़ महेशे ॥

॥ गीतार्थं श्रावयति ॥

ऋषि, हे पार्वति, शिवक चरित्र बुझैते कठिन थी(क), मोञो कहै छओ, अवधान करु ॥

ऋष्युक्ति गीतं ॥ मालव ॥ चो ॥

जारि कुसुम धनु, भसमे धवल तनु, अनुखन भोजन भागे,
शिर गांगे लो ॥

---

१. व० पृ० सं०—३२; एक्स-५क।

२. 'छूछिअ धारी' एहनो पदच्छेद संभव अछि।

३. व० पृ० सं०—३३; एक्स०-६क।

कओने गुने हिमगिरि[1] राजकुमारी, तुव नारी लो ॥ ध्रुव ॥
सहज दिगम्बर, बूढ़ बसह पर, भूषण बाघेरि छाला,
रुद्रमाला लो ॥
भूत सेवक साथे, खटंग डमरु हाथे, सबे खण सुतथि मशाने,
विषपाने लो ॥
जगदिश बोल सुन, गौरिक वर पुन, देवहुक देव अदेशा,
पुर आशा लो ॥

गीतार्धं भाव[2]यति ॥

अपन एहन रूप, आनका महादेवहिक प्रसादे सबे सिद्धि ॥
गौरी, हे ऋषीश्वर ओहाञो किछु ईश्वरक आदि मूल बनै छी ॥

गौर्य्युक्ति गीतं ॥ गौडामालव ॥ ञ ॥

बांधे विकट जटा, तथिहु चाँदेरी फोटा ॥
कत युग सहस वयस बहि गेला ॥
उमत महादेव समत न भेला ॥
मौलि मेलय छार, सहज न तेज पार ॥
नाम वमदेओ, हुडे न हृदय केओ ॥
कवि विद्यापति गाऊ, जीबओ शिवसिंह राऊ ॥[3]

[ऋषि, तें इहे पए जानिञो, त्वराए ईश्वर मनाञो आनु ॥
गौरी, मञो जाइ छञो] ॥

ततो गौरी ईश्वरं हस्ते गृहीत्वा स्थानमानयति ॥

गौरी, हे ईश्वर हम सञो किए रुसै छी, हम नैहर पठैअहु ॥

1. एहि ठाम (v v v) एहि प्रकारक चिह्न छैक।
2. म० पृ० सं०-३४ ; एवस०-६ ख।
3. रागतरङ्गिणी (पृ०-१०७) मे गौडामालवक गौडीय प्रभेदक उदाहरणमे ई गीत देल गेल अछि। पाठान्तर—बांधए। तथिहुँ चदिन। तेजए। चारिम पंक्तिक अभाव। सुकवि। जिवओ। शिवसिंह।

॥ महादेवोक्ति गीतं ॥ पहड़िआ ॥ झए ॥

रुसलि भवानी न मानए बोध, आजे कमहु गौरि मोरे अनुरो(?)[1] ध ॥
जत किछु मन तोह अछए भडार, पहिलहि देव गिम फणि मणिहार ॥
[2]भुखलौं माँग देअओ विषे खानि, पडअक बसहा देवउ पलानि ॥
भइन विद्यापति पुनु पुनु सेव, चवलदेविपति वैद्यनाथ देव ॥

ऋषि, हे महादेव, मोर विज्ञप्ति सुनु ॥

ऋष्युक्ति गीतं ॥ मालव ॥ खजं ॥

हर हे खेवए अएलहु सुख लागी, विषम नयन अनुखन वर आगी ॥
वसह पराएल आगे, पैसि पताल रहल गए नागे ॥
खसि उठि चलल अकासे, गौरि चलल गिरिराजक पासे ॥
उचित कहए नहि आई, उमत अराधव कओने उपाई ॥
विद्यापति कवि सेवा, देथु अभय वर शंकर देवा ॥[3]

ऋषि, हे पार्व्वती, तोहे ईश्व[4]रक अर्द्धशरीर, तहि सिञो कोप नहु उचित ॥
गौरी, हे ऋषीश्वर एवमेव, ॥
गौरी, उत्थाय महादेव समीपं गत्वा प्रणमय ॥
मोरा किछु गोचर भेलछ, से गोचर करै छञो, अवधान करु ॥

1. म० पृ० सं०—३५; एवस—७ क।
2. एहि ठाम 'भुखलहु' शब्द लीखि ऊपरमे चारु अक्षर पर ठुड्डु ठा लम्बरेखा देल अछि जे चारू अक्षरकेँ काटि देबाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि।
3. ई गीत मिथिलाक कोनो प्राचीन स्रोतसँ नगेन्द्रनाथगुप्त सेहो प्राप्त कयने छलाह या हरगौरीपदावली (गीत—३०) शीर्षकमे प्रकाशित कयौलनि। मित्र-मजुमदार (गीत—७१६) मिथिलामे लोकमुखसँ संगृहीत 'हरगौरी और गङ्गा विषयक पद' शीर्षकमे रखलनि। पाठान्तर—शिव हे। अयलाहुँ। विषम। अमुखने। बसहा पड़ाएल। लुकायल नागे। खसि। अकासे। चललि। पासे। बोलए नहि जाई। उमत भुआओब कओने उपाइ। भनइ विद्यापति दासे। गौरी शंकर पुराबथु आसे।
4. म० पृ० सं०—३६; एवस०—७ख

॥ गौरी महादेवयोद्द्वन्दक गीतं ॥ सिन्दुरा ॥ प्र ॥

भसम कल होअ सब मुख सूनिअ, मण्डप होअ तुअ तनू, हरहे,
नील रतन सम सामर सुन्दर, जारल कुसुम धनू, गोरि हे ॥
भुजग भुषण तुअ दुषण सबे देअ, किए घएल दिनमणि भासे, हरहे,
विमल कमल सम तुअ मुख मंडल, दरसन होओ ते आसे, गोरि हे ॥
अनल चाँद रवि विषम विलोच[1]न, ई किए अदबुद रूपे, हरहे,
विवद लागि धएल तीनि विलोचन, तुअ रुप अमिअ सरूपे, गोरि हे ॥
भूत बेताल ताल रवे नाचिअ, नाचिअ घरे घरे भीखि, हरहे,
आन कैओ जनु हमर सरुप बुझ, तोहे एक बुझह विशेखी, गोरि हे ॥
नृपजगजोति कह काहि न सोहए, गिरिजा गिरिश विलासे, हरहे ॥
प्रणमि प्रणमि ओहे पुनुपुनु विनमए, दुर कर कलुष तरासे ॥[2]

[महा, हे प्राणप्रिये मोहु[3] किछु कहै छि ॥]

[[| ॥ [4]सि ॥ प्र ॥

---

१. य० पु० सं०—३७; एकस—८ क।

२. गीतक अन्तमे छूट चिह्न दऽ कऽ पत्रक ऊपरमे लिखल अछि, 'महा, हे प्राणप्रिये, मोहु किछु कहै छि ॥ ॥ विभास ॥ चो ॥
गिरिवर नन्दिनि ॥ अभिसारिणि हे मा ॥
एकस०—११ख पर एकटा सम्पूर्ण गीत अछि जे 'गिरिवरनन्दिनि हर हिअ हारिणि'सँ प्रारम्भ होइत अछि। ओ गीत वर्त्तमान स्थलक थीक किन्तु प्रतिलिपि कालमे छूटि जयबाक कारण स्वतन्त्र पत्रमे लिखल गेल अछि। 'अभिसारिणि हे' सँ आरम्भ होमऽवला गीत उपलब्ध पत्रमे कतहु नहि भेटैछ।

३. 'मोराहु' लीजि 'रा' पर तीन गोट लम्बरेखा दऽ ओकरा कटबाक संकेत अछि।

४. एकस०—११ ख पर 'एक' अंक सन एक विशेष प्रकारक चिह्न दऽ कऽ गीत आरम्भ भेल अछि। ओ समस्त गीत य० पु० सं०—३७; एकस०—८ क मे अन्तर्मुक्त कऽ देल गेल अछि। एकस०—८क पर छूट संकेतमे राग '॥ विभास ॥' देल अछि किन्तु एतऽ '॥ सि ॥' अछि जे राग सिन्धुरा वा सिन्दुराक संकेत थीक। रागमे ई अन्तर किएक?

गिरिवर नन्दिनी हर हिअ हारिणि, मधुमय रूप अनूपे ॥
तिमिह्नु विलोचने सब दुख मोचन, के जान तोहर सरूपे ॥
तुअ मुख ससधर सब दिन रह पुर, मोर सिर बह नव चन्दा,
सकल कलामय गुणगण आलय, तोहु तह होअ अनन्दा ॥
तोहे वर नागरि सब तह आगरि, तोहे छाडि के मोरा आने,
जनमे जनमे हमे अनेक तपस कए, पओलाह तोहहि किआने ॥
तोहर परिवि गुणि सुनह सुलोचनि, बाटि देल तनु आधे,
तोहर चरित सबे कहि न होअ आवे, पुरल मनोरथ साधे ॥
सबहि जुगुति मति हरक चरण गति, महिपति जगजोति भाने,
दुर कएल भय नेह मोहि शरण देह, तोह तेजि गति नहि आने ॥ |]]

ऋषि, हे ईश्वर, अहाँ दुहु व्यक्तिक सामरस्य देखि हमरा बड आनन्द भेलछ, अतएव शान्ति रस गबैछी।

॥ गौरी ऋष्युक्ति गीतं ॥ आसावरी ॥ चो ॥

कैसे सतरथ भवतीरे, परलहु नीर गंभीरे ॥
हे शिव शिव हर ॥
शरण कएल तुअ जानी, राखह ईश भवानी ॥
करम धरम तप हीना, भेलहु[1] पाप अधीना ॥
तोहे त्रिभुवन पति नाथे, हम निरदोस अनाथे ॥
करण महेश कह एके, अबे सब तोहर विवेके ॥[2]

---

१ य० पु० सं०-३८; एकस०-८ख।

२. एहि गीतक भाव तथा दुइ गोट पंक्ति विद्यापतिक नाम पर चलैत गीतमे भेटैत अछि। संभव अछि जे करण महेशक प्रस्तुत गीतकेँ तोड़ि-मोड़ि कऽ विद्यापतिक नाम पर चला देल गेल हो। गीत निम्नरूपक अछि—

तोहे प्रभु त्रिभुवन नाथे। हे हर हम निरदोस अनाथे ॥
करम धरम तप हीने। पड़लहुँ पाप अधीने ॥
बेड़ भासल माझ धारे। भैरव धर कड़आरे ॥
सागर सम दुख भारे। अबहु करिअ प्रतिकारे ॥
भनहि विद्यापति भाने। संकट करिअ तराने ॥

—नगेन्द्रनाथगुप्त (हरगौरी पदावली, गीत-४२), मि० म०, गीत-७७५।

ऋषि ् हे सन्तजन ् नाटक नाना प्रकारक नचै छओ ् ताही ् श्रीश्री जगज्ज्योतिर्मल्ल महराजक अनुमत दुइ श्लोक कहै छओ ॥

श्लोकः ॥

नेत्राह्लादकरन्तु किञ्चिदपरं श्रोत्रप्रसादार्प्पकं ्
चित्ते सन्तनुते प्रमोदमितरत्त्वन्यद्विषादापहं ॥
नारीप्रीतिकरं कियच्च तरुणस्यैक शिशोः प्रीतिदं ्
पूर्णं सन्दरसैर्व्वदन्ति विबुधास्त्वेवं विधं नाटकं ॥
द्रव्यं केचन साधयन्त्यनुदिनं धर्म्मं परे त्वीप्सितं ्
मोक्षं केपि च नाट्यनीतिविधिना नानाविधं कामितं ॥
एवं सर्व्वमनर्थकन्तु मनुते भूमीपति श्रीजग/[1] ज्ज्यो-
तिर्म्मल्लशिवांघ्रिपद्ममधुपो ह्रीष्टार्प्पणं सार्थकं ॥

॥ गीतमपरञ्च ॥ केदारा ॥ खर्ज ॥

अघोर राह निरबाह नाही ् शरण राखह ईश ्
चांद चन्दन बिभुति भूषण ् भांग भोजन बीस ॥
कान कुण्डल करहि कङ्कण ् बलय हार फणीस ्
भूत सङ्ग मसान मन्दिर ् केलि कर अहनीस ॥
हाडमाल जटा बिराजित ् सबहि देव अधीस ्
अगम रूप सरूपे शङ्कर ् अघोर कओन सरीख ॥
परिहास त्रास उदास मानस ् चरण बन्दओ सीस ॥[2]

॥ सर्व्वे उत्थाय श्लोकं पठन्ति ॥

तदेकभक्तिभावनावशाच्चकार नाटकं ्
य एतदुत्तमं त्तरत्तमं सदस्य भूपतेः
अ[3]शेष देव दैवतं समस्त लोक सेवितः
शिवः शिवानि मङ्गला तनोतु मङ्गलानि सा ॥

---

१. ग० पु० सं०-३९; एबस०-६क ।

२. गीत-संग्रह, गीत-२३ । पाठान्तर-सरण । भोजन । सबहि । सरूप । कओन । बओ । निरदिश ।

३. ग० पु० सं०-४; एफस०-६ख ।

॥ तत्पश्चात्त गीतं ॥ मालव ॥ रू ॥

सात उपर सत सातहि गुनू ् समत नेपाल एहि बिधि जानू ॥
जेठ कुहू तिथि सुरुख गरास ् तुलादान मख कएल उलास ॥
कत उपचार मंगल धुनि बाज ् भगत नगर बहु सुजन समाज ॥
नृपजगजोति देखि भव भीति ् करम कएल जत चण्डि पिरीति ॥
सुकवि नशमणि मंगल गाऊ ् नृपजगजोतिमल्ल होथु चिराऊ[1] ॥

॥ हे बृन्द अतःपरं श्रीपशुपतिका स्तुति किछु करै छओ ॥

प्रथम प्रणमओ देव गणपति ् अओ षडानन संजुतं ॥
भाल बाल बिशाल शशधर ् लो/[2]चन त्रय शोभितं ॥
असुर किन्नर नाग नर वर ् सकल सेवित त्र्यम्बकं ॥
नास विहित समाधि सङ्कुल ् जोगि बन मणिपूरकं ॥
कम्बु कुन्द समान तनु रुचि ् बिजित फाटिक[3] पर्व्वतं ॥
त्रिपुर हर मति दुष्ट दानव ् दर्प्प खण्डन गर्व्वितं ॥
शिर मन्दाकिनि हाड किङ्किणि ् व्याल हार बिराजितं ॥
सनकादि मुनिवर बृन्द बन्दित ् नारदादि सभाजितं ॥
बिषय मोह ममत्व परिहरि ् नित्य बसथि मसान ॥
देखि रङ्कहि राज पदवी ् एहन के प्रभु आन ॥
कर त्रशूल डमरु शूलहि ् शिवक रूप अनूपमं ॥
अर्द्ध अङ्गहि अङ्गना धरि ् तिनिहु भुवन अनुत्तमं ॥
हर पाद पङ्कज निहित मानस ् नृपतिजगजोति भावितं ॥
भाव/[4]मत्वपराशि दारक ् भुक्ति सिद्धि मनारतं ॥

---

१. रागभजनसंग्रह, गीत—३९ । पाठान्तर—सातसात बसुजुगलकपाव ् समत नेपाल हिजयरहि मिलाव । कुहू । मखे । जगजोतिमल ।

२. ग० पु० सं०—४१; एबस०—१०क ।

३. एहि ठाम लम्ब रूपमे तीन बिन्दु देल छैक ।

४. ग० पु० सं०—४२; एबस०—१०ख ।

[॥ सर्व्वे उत्थाय कुराग प्रायश्चित्त गीतं गायन्ति ॥

हे वृन्द , नृत्य राग वेला नियम नहीं , तें कुरागओ गाविअ , ताहि पापक प्रायश्चित्तार्थं भैरवी रागे , हरिहर स्वरूप गवैं छी ॥

भैरवी ॥ चो ॥

गगन गगन[1]]

(॥ भैरवी ॥ प्र ॥

गगन गगन सम , जलधि जलधि सम , ताहि उपमा नहि आने ,
जे हर से हरि , जे हरि से हर , एक ओहे रहथि निदाने ॥
एक कर तिरशूल , एक कर सारँग , एक कर डमरु बजावे ,
एक कर पङ्कज , धरिए एक भए , दुइ तनु लोक देखावे ॥
दहिने वर दिअ , वामे अभय दिअ , दुहु ओहे मङ्गल रूपे ,
ओ कमलापति , ओ गिरिजापति , के बुझ दुहुक सरूपे ॥
शिव शिव दायक , हरि शुभदायक , एहे दुहु एक पराणे ,
मोह मगन जन , संकट जत होअ , ओहे ताहि करथि तराणे ॥
सुकवि वंशमणि , नृप जगजोति दुहु , हरि शङ्कर गुण गाई ,
कुराग गाम अवस , होअ पातक , भैरवि तह दुर जाई ॥)

---

१. ई गीत वर्त्तमान हस्तलेखक कोनो अतिरिक्त पत्रमे कतहु उपलब्ध नहि अछि। किन्तु थिक ई वंशमणि कविक हरिहर-स्वरूप-वर्णनात्मक गीतक आरम्भिक अंश। एहि गीतक पूर्ण रूप नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे रक्षित 'राग-भजन-संग्रह' (गीत—१०) नामक हस्तलिखित ग्रन्थमे भेटैछ। ओहिठाम सेहो ई गीत भैरवी रागहिमे देल गेल अछि। अन्तिम डेढ़ पंक्ति खण्डित छैक। भणितामे कवि ओ हुनक पोषकक नाम अस्पष्ट अछि। किन्तु 'नाना राग, (क्रमांक-प्रथम ३३८) गीत—२९ मे ई गीत पूर्ण अछि। गीत पूर्णरूपमे ओतहिसँ देल गेल अछि।

अनन्वयोपमाक प्रयोगक हेतु वाल्मीकीय रामायणक उक्तिसँ तुलनीय—

गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः।
रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोरिव ॥

॥ हे वृन्द , तदनन्तरं कहरा गायोथ , ॥

कहरा ॥ सारङ्गी ॥ चो ॥

वदन धन्य मोर हर गुण कहिए , श्रवण धन्य सेहे सुनिए रे ॥
कर युग धन्य कैए तसु अभिनय , नयन धन्य सेहे देखिए रे ॥
चरण धन्य हर भगति करिए जे , दुरित दुख दुर जैहओ रे ॥
जोग जतने जाहि जोगि न पावए , तहि आवे अचिरेहि पैहओ रे ॥
पतङ्ग न निहि पावक जानि परिहए , तैसन विषय रस वसिहए रे ॥
गमन पराभव देखि देखि जड़मति , पाछे पुनु पेचलैहए रे ॥
भगति भाव महिमा के जानए , वे नहि एहि सोहावए रे ॥
चकोर चाँद जनि अविरल सेवए , नृपजगजो[1]तिमल गावए रे ॥

[नृपतिः परिपातु पूर्णकामः , पृथिवीं , सन्तु निरामयाश्च लोकाः ॥
अथ वर्षतु वासवः स्वकाले , परमानन्दमयोऽयमस्तु देशः ॥]

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्ल कृतं पंचपंचाशद् गीतोपवद्धं हरगौरीविवाह नाम नाटकं समाप्तं ॥

श्रीभवानीशंकरौ प्रीणीतः ॥

॥ सम्वत् ४७६ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्य्यग्रासस
श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्म्मल्लदेवप्रभु ठाकुर सन तुलादानस ,
थ्व हरगौरी विवाह ब्याखन दयका जुरो ॥

॥ शुभानि भवन्तु ॥

---

१. ध० पु० सं०—४३; एफस०—११क।

हरगौरीविवाह नाटक

शब्दार्थ—संग्रह

अचिरेहि-शीघ्र. अजगुत-आश्चर्य-जनक. अदबुद-अद्भुत. अनबाह-अनवनि. अपद-अकारण. अमिअ(ए)-अमृत. आंजब-आँजन करब. आमोदे-सुगन्धिमे. इहाका-अहाँके. उगारब-उबटन लगायब. उरमसिए-ओरिआयले. उमत-उन्मत्त. ऊन-अल्प. कओनओ-कोनहु. कओगे-के,कोन. कओने परि-कोन प्रकारें. कहिनि-केहनि. काइ-किएक. काछए-वेश बनबए. कांति-कान्ति, शोभा. कृपाओ-कृपासँ. कैलि छिअथि-कयले छथि. कोह-क्रोध. खेमह-क्षमा करू. गरसिअ-गीड़ैछ. गिम-ग्रीवा, कंठ. गुरुविनि-गर्भवती. गोअए-नुकबैछ. गोइ-नुकाय. गोचर-निवेदन. गोबहि-नुकबैत छथि. चक्षुःस्पन्द-आँखि फरकब. चरम-चर्म, चाम. चाँदेरी फोटा-चन्द्रमाक ठोप. चिन्हल-परिचित. छओ-छी. जमनीपट्ट-पर्दा. जीतल-जीतल. जीनि-जीति. जुड़ाओन-शीतलकारक. जोर-युगल. झाँखब-चिन्ता करब. जौहा-जहाँ. टाड़-गहना विशेष. ठमा-ठाम. तवराए-तुरत. तथीहि-ताहिमे, ततऽ. तरुअर-तरुवर. तावे-तप्त करैछ. तुलै-समान. थिर-स्थिर. थोवहि-थोपने छथि. दहदीस-दशो दिशा. धूसर-मलिन. धोछी-निसोखि. नासिकबुद्धि-पशुबुद्धि. निओ-निज. निदाने-उपाय. निरदोस-निरुपाय. प्रणवि-प्रणाम कऽ. पटकल-पचकल. पठओलाह-पठौलनि. पठओवाह-पठयबनि. परसने-प्रसन्न. पसाहनि-शृंगार. पुने-पुण्यसँ. फाटिक-स्फटिकक. फोटगोट-नमहर ठोप. ब्याज-लाथ. बग-बमन करैछ. बलए-बलया. बाधे रि-बाधक. बासु-शिष्य, टहलू. बीस-विष. बेआजे-लाथें. बेआधि-व्याधि, रोग. बेआपित-व्याप्त. बेटिआ-बेटी, पुत्री. बोलसुहर-बोल मधुर. भगति-भक्ति. भुखलाँ-भूखलमे. भोअण-भोजन. भौंहेरि गोछी-भौंहक गुच्छा. मनिआर-मणियुक्त सर्प. मथा-माथ पर. मनाथिनि-मनाइनि. मन्दार-अकोन. मैओ-हम. मोओ-हम. याचना-याचना. याचे-याचना करैछ. राअ-राजा. राये-बजैछ. रुखेरि-रुण्डक. रुख-रक्ष. लोह-लोभ. सिरी-श्री, शोभा. सओ-सँ. सतरब-पार होयब. समजुत-संयुक्त. समतूल. सरीस-सदृश. संवर-संबल. साहजिके-स्वाभाविके. सीर-शिर. सोह-सोभैछ. होमाओ पार-भऽ सकैछ. हिअ-हृदय.

जगज्ज्योतिर्मल्लकृत

कुञ्जविहार नाटक

जगज्ज्योतिर्मल्लक 'कुंजविहार नाटक' विशेष रूपसँ चर्चित रहल अछि। किन्तु ई पूर्णरूपमे सुधी समाजक समक्ष प्रस्तुत नहि भऽ सकल अछि। एहन सूचना देल जाइत रहल अछि जे पी० सी० बागची महोदय 'परिचय' नामक बंगला मासिक पत्रमे प्रकाशित करौने छलाह। परन्तु ओ ककरहु दृष्टि पर नहि आबि सकल। कतहु कतहु एकर समीक्षा कयलो गेल तँ ओकरा कोनो स्थितिमे पूर्ण नहि कहल जा सकैछ। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक पत्रिका 'मनीषा'क १९७६क द्वितीय अंकमे हमरा द्वारा संपादित भऽ हिन्दी भूमिकाक संग प्रकाशित भेल परन्तु ओहो विद्वान् द्वारा अनदेख रहि गेल।

'कुंजविहार नाटक'क मूलप्रति काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि जे एहि नाटकक एक मात्र उपलब्ध प्रति थिक। ई तालपत्र पर नेवारी लिपिमे लिखित अछि। तालपत्रक आकार १२.१/२" × २.१/२" छैक। प्रति पृष्ठ पंक्तिक संख्या पाँच ओ पत्रक संख्या बारह छैक। एहि नाटकमे गीतमात्र अछि जकर संख्या चौंतिस अछि। तालपत्रक अन्तमे गीत सभक प्रथम चरणक पञ्जिका देल गेल अछि। रचनाकालक कोनो सूचना नहि अछि।

सर्वप्रथम एकर नामे अशुद्ध देल जाइत रहल अछि—कुंजविहारी नाटक। मूल प्रतिक आदि ओ अन्तमे क्रमशः लिखित अछि—'श्रीकुञ्जविहार नाम नाटकं लिख्यते' तथा 'इति कुञ्जविहार नाम नाटकं सम्पूर्णम्'। अतः एहि नाटकक शुद्ध नाम थिक 'कुञ्जविहार नाटक'।

एहि नाटकमे जे चौंतिस गोट गीत अछि तकर तुलना गीत पञ्जिकाक प्रथम चरण-सूचीसँ कयला उत्तर पता चलैत अछि जे कमसँ कम तेरह गोट गीत एहन अछि जकर प्रथम चरण गीत-पञ्जिकाक सूचीसँ भिन्न अछि। निम्नलिखित तालिकासँ ई स्पष्ट होयत—

गीत-क्रमांक	उपलब्ध गीतक प्रथम चरण		गीत-पञ्जिकाक प्रथम चरणांश
३.	कुञ्जविहार हरिराज	—	दखिन पवन
४.	जाहि बह जमुना तीर	—	देख धनि
६.	सखि आज	—	जबन पथम
७.	असह वेदन सहि न जाए	—	सुध सुधाक

उनहत्तरि

८.	कुल बहु नारि का लाज	—	नयन योग
१०.	खन एक हमहु आएब	—	नृपतिशिव
१३.	कूबरि कूबरि विरह बेआकुल	—	जाल बुनैते
१४.	जाएब मधुरि पुरि	—	हैन पिया
१५.	कान्हुक चरण भेटि आज	—	जाइते अमुना
१८.	अकामिक विहि मोर देल	—	तजु रि मानिनि
२०.	आज देखलि मोञे राधा	—	चलत हमे
२६.	ब्राह्मण बनिया आओर कत	—	तुर नद
२९.	परिनत भेल मोर भाग	—	भल न देख

एहि अन्तरक व्याख्या कठिन अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक गीतक जे संग्रह भेटल अछि ताहिमे हुनक नाटकोक गीत सब सम्मिलित अछि अथवा एक संग्रहक गीत दोसरहु संग्रहमे भेटैत अछि। परन्तु कोनहु संग्रहमे ऊपर परिगणित गीत नहि भेटैत अछि, संगहि गीतपञ्जिकामे देल चरणसँ आरम्भ गीत सेहो नहि भेटैत अछि। कुञ्जविहार नाटकक एहन गीतमे गीत संख्या—३, १०, १४, १६ ओ २० दुइ-दुइ चरण मात्रक अछि। स्पष्टे, ई अपूर्ण गीत थिक, कारण एकर प्रसंगानुकूल भाव सेहो पूर्ण स्फुट नहि छैक। शेष आठ गोट गीतक आरम्भक चरण लुप्त भऽ गेल अथवा गीत-पञ्जिकाक अनुसार पूर्व प्रयुक्त गीतक स्थानमे नवीने गीतक समावेश कऽ देल गेल।

'कुञ्जविहार नाटक'क शेष एकैस गोट गीतमे सतरह गोट गीत अन्यहु गीत संग्रहमे पाओल जाइछ। जगज्ज्योतिर्मल्लक सबसँ प्रसिद्ध ओ सुव्यवस्थित गीतसंग्रह अछि 'गीत पञ्चाशिका'। एकर रचना शकसंवत् १२५० (१६२८ ई०)मे भेल छल। एहिमे 'कुञ्जविहार'क एगारह गोट गीत भेटैत अछि जे निम्नलिखित संख्यक अछि। कोष्ठकमे 'गीतपञ्चाशिका'क संख्या निर्दिष्ट अछि—२(७), ६(६), ११(२७), १२(४०), १५(२०), १७(२३), २१(३१), २२(३३), २३(३४), २४(३५), ३०(१२)। दोसर अछि 'गीत-संग्रह'। एहिमे १४५ गोट गीत संकलित अछि। 'कुञ्जविहार'क पाँच गोट गीत एहुमे भेटैत अछि जकर संख्या कोष्ठकमे निर्दिष्ट अछि—५(८१), १६(१२७), २५(७५), ३१(७७), ३२(७६)। तेसर 'नानाराग गीतसंग्रह'मे ५७ गोट गीत संकलित अछि। 'कुञ्जविहार'क तैंतीसम गीत एहिमे पैंतालिसम गीतक रूपमे भेटैत अछि। शेष चारि गोट गीत—१, २७, २८ ओ ३४ अन्य कोनहु संग्रहमे नहि पाओल जाइछ तेँ नवीन थिक। अन्य संग्रहमे प्राप्त गीतक संग तुलनात्मक पाठालोचन कयने अत्यन्त सामान्य पाठान्तर देखल जाइत अछि।

'कुञ्जविहार' नाटक जाहि रूपमे एखन उपलब्ध अछि, तकरा नाटक मानब कठिन प्रतीत होइत अछि मुदा एकर आदि ओ अन्तमे एकरा नाटक कहल गेल अछि। किन्तु नाटकक जे मान्य लक्षण अछि अथवा नेपालीय नाटकक जे विशेषता सब होइछ अथवा जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक जे स्वरूप भेटैत अछि से एहि नाटकमे नहि अछि। एहि ठाम प्रस्तावनाक उल्लेख नहि अछि। आरम्भ होइत अछि मैथिली नान्दी गीतसँ। तदुपरि सूचना अछि 'सूत्रधार प्रवेश गीत' मुदा कोनो प्रवेश गीत नहि अछि। केवल अछि शिव स्तुति विषयक गीत। फेर सूचना देल जाइछ 'सूत्रधार निस्तार गीत' किन्तु एकर द्योतक कोनो गीत नहि अछि। नेपालक नाटकमे सूत्रधार नटीक संग वार्तालाप करैत नाटक, नाटककार, नाट्यावसरक सूचना दैत देशवर्णना, नगरवर्णना राजवर्णना, पुष्पांजलि विषयक श्लोक वा गीत गबैत अछि। परन्तु एहि नाटकमे एहन किछु ने अछि। अतः एहि नाटकमे सूत्रधार-प्रवेशक सूचनाक कोनो प्रयोजन सिद्ध नहि होइछ।

नाटकक मुख्य भागमे मंच निर्देश स्वतन्त्र रूपसँ नहि देल गेल अछि। अभिनय सम्बन्धी कोनो संकेत नहि अछि। अवश्ये पात्रक प्रवेशक सूचक 'प्रवेश गीतं' ओ 'पैसार गीतं' देल गेल अछि किन्तु एहि नाम पर प्रदत्त गीतमे पात्रक परिचय नहि अछि, अपितु ओकर मनोभाव वा संकल्पक वर्णन अछि। एक ठाम मात्र 'वृन्दा प्रवेश गीतं' कहि कऽ देल गीतमे वृन्दाक रूप-स्वभावादिक परिचयात्मक वर्णन अछि। एहिना पात्र-निष्क्रमणक सूचना 'निस्तार गीतं' कहि कऽ देल गेल अछि।

कथोपकथनमे गद्यक प्रयोग नहि अछि। जतेक गीत अछि से ककर उक्ति थिक तथा ओकर विषयक उल्लेख कयल गेल अछि। किछु गीतमे केवल उक्ति-सूचना मात्र अछि, यथा—सख्युक्त गीतं, कृष्णोक्ति गीतं, राधोक्ति गीतं, वृन्दाक कौतुक गीतं, गोप्युक्त गीतं, स्त्री उक्ति गीतं, स्त्री विरह गीतं, कृष्ण गोप्योक्तिप्रत्युक्ति गीतं। किछु गीतमे उक्ति-सूचना नहि दऽ केवल विषय-सूचना दऽ देल गेल अछि, ककर उक्ति थिक से पूर्वापर प्रसंगसँ निर्धारणीय अछि।

नेपालक नाटकमे ओ जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक अन्तमे संस्कृतमे भरत-वाक्यक प्रयोगक संग देव-देवी वन्दना, शान्तिगीत, कुराग प्रायश्चित्त गान, आरती गीत इत्यादि रहैछ। 'कुञ्जविहार नाटक'मे भरतवाक्य नहि अछि, किन्तु शान्तिरस गीत, देवी विज्ञप्ति गीत ओ आरती गीतक प्रयोग अवश्य भेल अछि। यद्यपि एकर गान के करैछ से अस्पष्ट अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक 'मुदित कुवलयाश्व नाटक' चारि अंकमे विभाजित अछि। परन्तु 'कुञ्जविहारमे' एहन कोनो विभाजन नहि अछि।

गीत मात्रक प्रयोग होइतो एकरा नाटक कहल गेल अछि । अवश्ये ई गीत सब कथा क्रमक अनुसार कथोपकथनक क्रमे व्यवस्थित अछि । अतः एकरा 'गीति नाट्य' कहल जा सकैत अछि । हमर अनुमान अछि जे 'कुञ्जविहार नाटक'क उपलब्ध प्रति सम्भवतः नाटकक प्रथम वा द्वितीय प्रारूप थिक । 'पोडश गीतम्' ओ 'मुदित कुवलयाश्व नाटक' क सेहो एहन प्रारूप उपलब्ध अछि । संयोग वश उपर्युक्त दुहू कृतिक नाट्य रूप सेहो उपलब्ध अछि परन्तु 'कुञ्ज विहार'क एहन दोसर प्रति उपलब्ध नहि भऽ सकल अछि ।

भाषाक दृष्टिएँ नाटक विशुद्ध मैथिलीमे अछि । गीत सब ककर उक्ति थिक तथा ओकर विषय-संकेत अवश्ये संस्कृतमे देल गेल अछि । गीतक भाषामे तत्सम शब्दक प्रधानता अछि । तद्भव वा अर्द्धतत्सम शब्द ओ अपेक्षाकृत कम अछि । किछु स्थान पर प्राकृत वा अवहट्ठ रूपक प्रयोग देखल जाइछ, यथा-रअणि < रजनी, सँढासी < सञ्चासी < संन्यासी, कटमति < कृतमाली । मध्यम-पुरुषक सम्बन्ध कारकक रूप दुइ स्थल पर क्रमशः 'तुमार' ओ 'तेरे' सामान्य प्रयोग 'तोहर' ओ 'तोरसँ' भिन्न अछि । किछु शब्द पर नेवारी ध्वनिक प्रभाव सेहो अछि, यथा-शून (शूर), कथिन (कठिन), युजल (युगल), लमसे (रमसे), गेर (गेल) इत्यादि । ई सब नेवारी लिपिकारक भ्रमवश भऽ गेल अछि । कारण अन्य स्रोतक पाठान्तरमे एकर शुद्ध रूप भेटैत अछि ।

गीत सबमे रागक निर्देश अनिवार्य रूपेँ अछि । केवल दसम गीतमे कोनो राग-निर्देश नहि अछि । निर्दिष्ट राग सब थिक-आसावरी, कानरा, केदारा, कोराव, देशाख, धनाश्री, नट, पहड़िया, पंचम, वराडि(डी), वेलावरी, भीमपलासी, भूपाल, मारु, मल्लारि, मालव, राजविजय, वसन्त, श्री ओ सारङ्गी । कोनो-कोनो गीतक भणिताक चरणमे सेहो राग निर्देश कऽ देल गेल अछि ।

किछु लघुगीतकेँ छोड़ि सर्वत्र भणिताक प्रयोग भेल अछि । भणितामे कवि 'नृपजगजोतिमल्ल' 'नृपति जगजोतिमल्ल' 'नृप जगजोति' अथवा 'जगजोति नरेश'क प्रयोग कयलनि अछि ।

एहि नाटकक अंगीरस शृंगार अछि एवं हास्यादि अन्य रस अंग रूपमे आयल अछि । राधा-कृष्णक प्रेम लीलाक वर्णन करितो, अन्य देव-देवीक प्रति श्रद्धान्वित रहितो कवि शिवभक्त छथि तकर प्रमाण एहु नाटकमे देखल जाइछ ।

नाटकक कथा वस्तु कल्पित अछि । कहबाक चाही जे कोनो कथानक नहि अपितु ओकर आभास मात्र अछि । अत्यन्त सूक्ष्म काल्पनिक कथासूत्रक माध्यमे राधा-कृष्ण-विलासक वर्णन कयल गेल अछि । राधा एवं अन्य गोपी लोकनिक कृष्णक संग अद्भुत प्रेम, मान, विरह, मिलन आदिक चित्रण कयल गेल अछि ।

कृष्णक कुञ्जविहार-सज्जा देखि गोपी सब हर्षित होइत छथि । कुञ्जविहारक स्थान वृन्दावनक यमुना-तीर पर अछि । शीतल-सुरभित समीर, नवदल युक्त तरुगण एवं मधुकर-ध्वनि-पूरित वातावरण । छवहु ऋतु उपस्थित । कृष्ण कहैत छथि—आइ एहि वनमे ई (षड्ऋतु) विराजित अछि । जँ एहन समयमे अहाँक संग भेटय तँ कामना पूर्ण हो । कारण, सज्जित धनुष लऽ कामदेव दिन-राति घूमि रहल छथि । ई कहि कृष्ण राधाक वस्त्र घीचि लैत छथिन । राधा माथ झुका लैत छथि । पुनः राधा उलहनक स्वरमे कृष्णक रति-व्यापारक वर्णन करैत मधुर भर्त्सना करैत छथिन । फेर पूछैत छथिन जे हाथमे वेणु ओ अमृत समान गान सुनि कोन मानिनीक मान रहि सकैछ । ताहि पर अहाँक आँखिक कटाक्षसँ भेल कामदेवक आघात एहन, जेना घाओ पर नोन छीटल हो ! हे कृष्ण ! मनमे विचारू, अबलाकेँ मारि कोन फल पायब ?

कृष्ण घोषणा करैत छथि जे बन्धुजनकेँ विश्वस्त कऽ मथुरापुर जायब । फेर राधाक लग आबि यथारीति केलि-कौतुक करब । तखन राधा ओ अन्य गोपीगण दू गीतमे अपन विरह व्यक्त करैत छथि । एकरा बाद वृद्धा प्रवेश करैछ जकर रूप ओ स्वभावादिक वर्णन कयल गेल अछि । ओ बूढ़ि अछि । डाँड़ झुकल छैक । केश उज्जर छैक । केतको सन दाँत छैक । दूनू आँखि संकुचित छैक । शरीरसँ स्तन झूलि गेलैक अछि । बुढ़िया अछि तँ बहीर मुदा कौशल बड़ बनैत अछि । दूती-कार्यमे अधिक चतुरा अछि । एकक स्त्रीकेँ दोसर पुरुषसँ मिलबैत अछि । कुलटा वयस बितला पर कुट्टिनी बनि जाइछ ।

राधा पुनः प्रवेश कऽ कहैत छथि—हम मथुरा जा कऽ कृष्णकेँ देखब अगिला गीतमे राधाक विरहोक्ति अछि जे–प्रथम दर्शनमे चन्दन-वृक्षकेँ नहि चीन्हि पौलहुँ । पाछाँ ओकर सौरभ अनुभूत भेल । ओकर गुण-स्मरण कऽ हृदय पीड़ित अछि । सूर्यकेँ देखि जेना सरसिज विकसित होइछ तहिना प्रेम बढ़ि रहल अछि । मनमे होइछ जे हुनका लग चल जाइ । परन्तु सर्प-संकुल पथ देखि भय होइछ । दारुण विधाताक ई कृत्य जे सुजनसँ अमिलन ओ कुजनक संग भेटैछ !

दूती प्रवेश कऽ कहैछ जे कृष्णकेँ हम राधाक निकट अनबनि । ओ कृष्णक लग जाय राधाक विरहक वर्णन करैछ । किन्तु कृष्ण राधाक सखिएक प्रति आकृष्ट भऽ ओकर अधरामृत पान करबाक हठ करैत छथि । 'छैल कुतुहल केंगहि वश होअ' । से दूती रूप राधाक सखी कृष्णक आग्रहक वशीभूत भऽ जाइछ ।

ओ दूती अस्तव्यस्त रूपमे राधाक निकट अबैछ । राधा ओकर अस्तव्यस्तताक कारण पूछै छथिन-साँस किएक ने थथल होइत छह ? सखी–जल्दीसँ अहाँक लग अयलहुँ हेँ । राधा–अधरकान्ति धूसर किएक छह ? सखी बहुत-प्रकारेँ

कृष्णकेँ बात कहल । राधा—अलक-तिलक मेटा गेलह ? सखी—हुनक पैर पखाड़लियनि तेँ मेटा गेल । राधा—वस्त्रक अदला-बदली किएक ? सखी—अहाँक प्रतीति हेतु । राधा सब बुझि जाइत छथि आ कहैत छथिन—हे बुधियारि ! लाथ नहि करह ।

कृष्ण पुनः कुञ्जमे प्रवेश करैत कहैत छथि—आइ राधाकेँ देखल । हृदयक अनुबन्ध छोड़ल नहि होइछ । आइ मनक सब आकांक्षा पूर्ण होयत ।

तखनि राधा कहैत छथि जे संसारमे सब जनैत अछि जे सौतिनिक समान अहितकर दोसर किछु नहि होइछ । ओकरा नित्य मधुर वस्तु दी तथापि ओ कड़ुए मानैछ । सर्पदंशक औषधि भऽ सकैछ मुदा ओकर नहि । जखन अपने प्रियतम अहितकर होथि तँ धैर्य नहि रहि जाइछ । राधा तेसर गीतमे कृष्णक कृत्य (दूतीक संग रतिक्रीड़ा)क भर्त्सना करैत छथि । कृष्णक संगहि समस्त पुरुष जातिक निन्दा करैत छथि । कृष्णो नारी वर्गक घोर निन्दा करैत छथि । राधा कटु शब्दमे एकर उत्तर दैत छथि । कृष्ण पुनः मतिमान् व्यक्तिक परिचय दैत छथि । ओही समयमे वृन्दा अपन काम-व्यापारक वर्णन करैछ । फेर 'उपहास्य गीत' द्वारा ओकर विकृताकारक वर्णन कयल जाइछ । एहि ठाम ई स्पष्ट नहि अछि जेई गीत ककर उक्ति थिक । इहो स्पष्ट नहि होइछ जे बुढ़िया अबिते किएक अछि तथा एकरासँ कोन नाट्य-प्रयोजन सिद्ध होइछ । अस्तु । तदुपरि गोपी सब कृष्णक आचरणक निन्दा करैछ । एकरा आगाँ नाट्य-निर्देश अछि-कृष्ण गोप्योक्ति-प्रत्युक्त गीतं तथा एकहि गीतमे गोपी-कृष्णक उत्तर-प्रत्युत्तर वर्णित अछि । एहि ठाम राधाक उल्लेख नहि कऽ गोपीक उल्लेख कयल गेल अछि । मान-भंग भेला पर गोपी (ताहिमे राधा सेहो होयतीह) एवं कृष्ण मिलनक स्थितिमे आबि जाइत छथि ।

कथा भाग एतहि समाप्त भऽ जाइछ । एकर बादक गीतमे परम्पराक निर्वाह कयल गेल अछि जाहिमे तीन गोट शान्ति गीत, एक गोट देवी-विज्ञप्ति गीत तथा अन्तमे आरती गीत देल गेल अछि । एहि पाँचो गीतक मुख्य कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक । एहिमे सांसारिक माया-मोहसँ ग्रस्त मनुष्यक चित्रण, संसारक निस्सारता, भगवद्भक्तिक महत्त्व आदिक वर्णन कयल गेल अछि ।

गीतक दृष्टिसँ अवश्ये एहि नाटकमे उत्कृष्टता अछि । विरह-वर्णन, मानव-जीवन, ओकर स्वभाव, ओकर अनुभव इत्यादिक वर्णनमे कवि स्वाभाविकताक आश्रय लेल अछि जाहिमे एकटा अभिनव काव्यास्वादक सृष्टि होइत अछि । सब मिला कऽ कुञ्जविहार नाटक मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण कृति थिक तथा नेपालमे रचित मैथिली नाटकक एक प्रकारक रूपमे एकर गणना कयल जा सकैत अछि ।

कुञ्जविहार नाटक

॥ ॐ नमस्तस्यै ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ परदेवतायै नमः ॥ सावरणार्द्धनारीश्वर नृत्यानन्दस्वरूपेभ्यो नमः ॥ श्रीकुञ्जविहार नाटकं लिख्यते ॥

प्रथमं नान्दी गीतं ॥ राजविजय ॥ जति ॥

अनल सुरुज शशि तिनिहु नयने, जत अभिमत देअ पावहु वदने ॥
वराभय शूल हाथ डमरु बजावे, ताहि शिव परसादे सबे सुख पावे ॥
गजानन षडानन सुत दुहु सङ्गे, मङ्गलदायक रुद्र अछ वड़ रङ्गे ॥
चाँद गाङ्ग तनु तिनु धवल प्रगासे, नृप जगजोति मन सुख पद आसे ॥१॥

॥सूत्रधार प्रवेश गीतं ॥ मालव ॥ अस्तारा ॥

विभूति भूषण भव मणिमय हारे, चरम वसन शिर सुरसरि धारे ॥
तिलक अमिअकर गरल अहारे, मदन बहम[1] हर संसारक[2] सारे ॥
त्रिशूल डमरु कर वसह पयाने[3], तुमार सरूप शिव केओ नहि जाने ॥
कहेँ[4] नृप जगजोति सुन शशि भाले, राग मालव गावए इहो अठताले ॥२॥

॥ सूत्र निस्सार गीतं ॥ आसावरी ॥ प्र ॥

कुञ्जविहार हरि छाज रे,
गोपी सबे हरखित आज रे ॥३॥

॥ राधाकृष्णयोरलंकार प्रवेश ॥ वसन्त ॥ ए ॥
जाहि बह जमुना तीर, सीतल सुरहि समीर ॥
नव दले तरुवर सोह, मधुकर धुनि सब मोह ॥
ताहि विरिदावन माझ, हमर हृदय पुर्ण काज ॥
ताहा कए करिए विलास, जओ पहु पुरावए आस ॥
नृप जगजोतिमल वाणी, मोर गति एके भवानी ॥४॥

---

२. गीत पञ्चाशिका (७)—१. बहन २. संसारक ३. पयाने ४. कहु ।
रागोल्लेख अछि—वर धन्वना गौड़ा ॥ मालव ॥ अस्तारा ॥

॥ षड्ऋतुवर्णना गीतं ॥[1] पहड़िया ॥ प्र[2] ॥

समय वसन्त विपिन घन सोह, परिहरि लाज मुनिहु का मोह ॥
ऋतु करिए विलास ॥ ध्रु ॥[3]

तप ऋतु सबहि सुशीतल जीव[4], विरहिणि रयणि दिनहि दिन खीन ॥
बारिस थरहर सबहि सोहाव, जलधरे धोएल धुरि महि ताव ॥
सरद सोहाओन ससधर भास, पाँक पखाडल जल परगासे[5] ॥
हिमऋतु जुवती हृदया लाय, दिन जके रसिक विरह घटि जाय ॥
शिशिर सबहि मन तपन उछाह, कमलिनि जन हिमजले देल दाह ॥
नृपजगजोतिमल्ल भने गुणि गाव, छओ[6] ऋतु रस पुनमत जन पाव ॥५॥

कृष्णोक्ति गीतं ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

सखि आज,
इ वन तेहि विराज, जओ पाव तोहर समाज ॥
साजल धनु धरि काम, अहनिस भम एहि ठाम ॥
एत बोलि विहुसि निहारि, पुलकित देह मुरारि ॥
वसन करखि हरि लेल, राधामुख अवनत भेल ॥
नृप जगजोतिमल्ल गाव, हरक चरण मन लाव ॥६॥

राधोक्ति गीतं भूपाली ॥ प्र ॥

असह वेदन सहि न जाए, के विधि रहब कह उपाय ॥
वसन हरैते ससरि गेल, तखने कुच नखे खत देल ॥
लाजे कर दुहु हृदय देल, सर गदगदे वाणि न भेल ॥
श्याम तनु सबे कपटि होए, प्रकृति हुनकि रह न गोय ॥
केलि समयहि लाज न मान, शिव गति नृप जगजोति भान ॥७॥

कृष्णोक्ति गीतं ॥ नट ॥ ए ॥

कुलवहु नारि का लाज सोहावए केलि अवसर अनुरीत
तोहर वदन देखि धरि न होअ मन न करहु मान सभीत ॥
राधा हेरे चञ्चल लोचन जोरा ॥ ध्रुवं ॥
तोहर दास पद भोज बड़ मानओ न करह हृदय मलान ॥
मदन वेआधि मोर एक औषध तोहर अधर मधु पान ॥
हम किछु विहुसि निहारहु सुन्दरि, परिहरि पिसुनक पास ।

५. गीत संग्रह (८१)—१. (अभाव) २. म ३. एहि ऋतु ऐसन होअ ॥ ध्रुवं ॥
४. जीव ५. परगासे ६. छव ।

कतहु न पाए अमावस रअनी, कुमुदिनि होअ विकास ॥
नृप जगजोति अपन मति गावए, राधा कान्हु विलास
नूतन नारि नागर दुहु कौतुक शिव पए पुरबथि आस ॥८॥

॥ स्त्री उक्ति गीतं ॥ पहड़िया ॥ ए ॥[1]

कर लए वेणु अमिअ सन गान, तखने रहत की मानिनि मान ॥
ताहि उपरे[2] दुअ नयन तरङ्ग, क्षत खरिया जके[3] मार अनङ्ग ॥
अरे कान्हु[4] अरे कान्हु[5] हेरिअ विचारि, की फल पओवह अवला मारि ॥
नृप जगजोतिमल्ल हरि गुण गाव, दुअ पद पंकज सबहि सोहाव ॥९॥

॥ कृष्ण निस्सार गीतं ॥ प्र ॥

खन एक हमहु जाएब मथुरापुर दय बंधु जन विसवासे,
करब मथारिते केलि कुतूहल फिरि आए राधाहिक पासे ॥१०॥

॥ स्त्री विरह गीतं[1] ॥ कोराव ॥ ख[1] ॥

बत अनुराग लाए गेल दूर, सुमरि सुमरि[3] हिअ हो मोर शूल[4] ॥
चाँद चन्दन[5] सखि गरल समान, सब तह कथिन[6] कुसुम शर[7] बान ॥
मधुरे मधुरे सरे कोकिल गाव, विहि मोर वाम मरण पए भाव ॥
कएल कनक सम तह्निक विचार, प्रेम कसौटि कसि बुझल[8] भङ्गार ॥
नृप जगजोति कह सुनहु सयानि, आओत बालभु दुअ गुण जानि ॥११॥

॥ स्त्री विरह गीतं[1] ॥ आसावरी ॥ ए ॥

हरि धुनि हरि सुनि[2] हिअ लाल, हरि पेखि हरि रस सहए न पार ॥
हरि देखि हरि हरि हरि जे संताव, हरि बैसि हरि मोहि किछु न सोहाव ॥
सरसिजदल हरि जके जिव डोल, हरि सम होअ मोहि हरि घन रोल ॥
हरि भेल हार हरिहि पए बुझ[3], हरि सम लोचन किछु न सूझ ॥
हरि पदे नृप जगजोतिमल गाव, हरिगमनी हरि अनुअहि पाव ॥१२॥

वृद्धा प्रवेश गीतं ॥ सारङ्गी ॥ प्र ॥

कूबरि दूबरि विरह वेआकुल, दूति काज पर अधिक चतुर ॥
सनसन केस केतकि सन दात, आखि दुहु कुह लावल कुच गात ॥

९. गीत पञ्चाशिका (६)—१. पुनः कृष्ण स्तुति नचारी ॥ पहड़िया ॥ प, ए ॥
२. उपर ३. जकि ४. कान्हु ५. हलिअ ।
११. तत्रैव (२७)—१. सखीं प्रति विरहिण्या उक्तिः २. चो ३. सुमरि
४. शूर ५. चंदन ६. कठिन ७. सर ८. बुझल ।
१२. तत्रैव (४०)—१. विरहिण्याः स्त्रिया उक्तिः कूटं २. धुनि सुनि ३. बूझ ।

बुढिआ बहिरि कोसल कत जान, आन नारि भेराबए आन ॥
कुलटा बयस गेले होअ कुटनी, नृप जगजोति शिव भगत धनी ॥१३॥

राधा पैसार ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

जाएब मथुर पुरि कान्हु देखब ताहि
मोरे बस होएत सबे राहि
की देखद यु ॥१४॥

॥ राधोक्ति गीतं ॥ आसावरी ॥ गण्डलजति ॥[1]

दरशने न चिन्हल[2] चान्दन गाछे, अनुमनि सौरभे कुशल पाछे ॥
तसु गुण समुझि हृदय होअ सूर, पेम बाढ जैसे सरसिज सूर ॥
पुनु मन करिअ जाइअ तसु पासे, फणि बेढल देखि उपज तरासे[3] ॥
शिव शिव दारुन विधिक अकाजे, सुजन अमिल हो[4] कुजन समाजे ॥
नृप जगजोति कह एहे सब भाव, पुरुव[5] पुण्य पए संघटाव ॥१५॥

॥ दूती पैसार गीतं ॥ वराडि ॥ प्र ॥

कान्हुक चरण भेटि आव,
आनब राहिक समाव ॥१६॥

॥ सख्युक्त गीतं ॥ मालव ॥ स ॥[1]

कुसुमे साजल सेज परिहर दूर, तोहे बिनु हृदय होअए तसु सूर ॥
जतन करए तुअ दरसन लाई, अविरल नयन नोर[2] बहि जाई ॥
अनुखन तोहरे धरए धेआन, लए कुंकुम लिह तनु अनुमान ॥
पए पडि पुनु पुनु कह अनुतापे[3], खने हस खने रस करए विलापे[4] ॥
नृप जगजोतिमल ई रस गाव, दूति उकुति बुझ आठओ भाव ॥१७॥

कृष्णोक्ति गीत ॥ कानरा ॥ प ॥

अकामिक विहि मोर देलि एहि (हा)थहि, पाओल निधि परिहरि कओन जान ॥
उकुति भाव तोर कुशल विशेषिए, तोहि सम चातुरि के होएत आन ॥
अनङ्ग तरङ्ग हनइ हिअ हनरे, भौंह धनुक तुअ लोचन बाण ॥
ताहि बेआधि आधि मोहि राखह, दैए अधर मधु पीयूष पान ॥
छैल कुतूहले के नहि वश होअ, ईश भगति नृप जगजोति भान ॥१८॥

॥ राधोक्ति गीतं ॥[1] मालव ॥ प्र ॥

किए नहि धरि होअ सास[2], दूती किदहु, तोहिले, अएलहु तुअ पास, रामा ॥
अधर धूसर भेल कान्ति[3], दूती किदहु, कहल कहिनि कत भान्ति[4], रामा ॥
अलक तिलक गेल दूर, दूती किदहु, तसु पए पहु ते चूर, रामा ॥
वसन फेर किए भेल, दूती किदहु, तुअ विसवासि[5] लागि देल, रामा ॥
नृप जगजोति कह जानि, दूती[6] किदहु, लाथ न करह सयानि, रामा ॥१९॥

॥ कृष्ण पैसार गीतं ॥ वेलावरी ॥ प्र ॥

आज देखलि मोञे राधा, कि कुञ्ज वन,
हृदयक अनुबंध तेजि न हो मोहि पुरत सकल मन साधा ॥२०॥

राधोक्ति गीतं ॥[1] धनाश्री ॥ प्र ॥

सौतिनि सम नहि आन, जगत अहित सबे जान, सजनी सेर[2]
जैओ मधुर दिअ नीत, ओ सबे मानए तीत ॥
साप डासल[3] होअ सार, ओकरा नहि परकार ॥
पहु होअ अपन अहीत, नहि धैरज हो[4] चीत ॥
नृप जगजोति एहे भान, राखब डुहुक[5] मान ॥२१॥

॥ राधोक्ति गीतं[1] ॥ देशाख ॥ ए ॥

अधमक सङ्ग रङ्ग तोहे[2] छाज, अबुझ बुझाओब कओन परि आज ॥
पुरुष जाति सबे जहा तहा[3] बूल, लखए न पार[4] कचर की मूल ॥
सब घर सुनिअ तोहर उपहास, तोहे सओ केलि करब कओन आस ॥
नागर भाव गमार न सूझ, पिक पञ्चम की वायस बूझ ॥
नृप जगजोति कह भाव अनेक, से बुझ जकरा हृदय विवेक ॥२२॥

॥ कृष्णोक्ति गीत[1] ॥ कोराव ॥ चौ[2] ॥

नारी नीर नीच अनुसरई, कत अवरोधिअ[3] थिर न रहई ॥
कपट कोपे[4] धर कुलटा रीति, पुरुष दोस कहए जग जीति ।

---

१५. गीतपञ्चाशिका (२०)—१. अन्यापदेश नचारी ॥ आसावरी ॥ ए ॥ २. चिह्नल ३. डराते ४. होअ ५. पुरुब ।
१७. तत्रैव (२३)—१. कृष्णस्त्रीविरहे अवस्थाधि कथनं ॥ मालव ॥ खर्जति २. नोर ३. अनुताप ४. विलाप ।
१९. गीतसंग्रह (१३७)—१. (अभाव) २. सांस ३. कान्ति ४. भांति ५. तुव विसवास ६. दूती ।
२१. गीत पञ्चाशिका (३१)—१. सपत्न्याः सपत्नी निन्दा २. सर ३. डासल ४. होअ ५. डुहुक ।
२२. तत्रैव (३२)—१. पुरुषह्रासे स्त्रिया उक्तिः ॥ २. तोहे ३. जाहा ताहा ४. पर ।

कतेओ मनाईअ[4] अपनि न होई, कर परपञ्च हृदय धर गोई ॥
तुअ अपशेषि देखि परिणामा, समुचित नाम धएल विधि वामा ॥
नृप जगजोति वचन किछु सुनु, टूटल हार गांथिअ पुनु पूनु[6] ॥२३॥

॥ राधोक्ति गीतं ॥ मल्लरि ॥[1] प्र ॥

घातर चकमक चिर नहि रहई, कुपुरुष पेम दिवस दुइ वहई ॥
हुनकर दोस धरहु की गोई, सहजक कुटिल तोश नहि होई ॥ध्रुवं॥
बाँसक डलिआ जल जवो[2] धरई, जतनहु राखिअ अवस पए झरई ॥
काचक टार काम नहि फबई, अवसर भाँगि जोर नहि अवई ॥
तन्हि के आस जौवन[3] मोर घटई, लाभ के लोभे मूलो धन घरई ॥
ए सखि तन्हिक नाम नहि लेबई, सुनितहि हृदय पराभव देवई ॥
नृप जगजोति अपन मति भनई, विघटल पेम सुदिन संघटवई ॥२४॥

॥ कृष्णोक्ति गीत[1] ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

आकरे आकरे[2] होअ कत हीर, भाति भाति[3] उपजए कत चीर ॥
नागर नारि रूचअर[4] फूल, तुरगे तुरगे बड अन्तर मूल ॥
गजहि गएन्दहि[5] बहुत विशेष, ओहि मतिमन्त विचारीए[6] देख ॥
अबुझ बुझए ओहि सकल समान, जतनहु सिझ (न)[7] सिझउसे पषाण ॥
नृप जगजोतिमल कएल विचार, तिनि विधि विधि निरमाओल संसार ॥२५॥

॥ वृद्धाक कौतुक गीतं ॥ भीम पलासी ॥ ए ॥

बाह्मन वनिआ आओर कत जाति रे, दश पाञ्चे खेपओ सगरिए राति रे ॥
भुखे दुखे कोपे भेख धर जोगि संडाओ, मोहि सञो केलि कर कटमालि तपसी ॥
दिन दुइ चारि गेले पाछ पचताओ रे, धनक कारणे पुनु दह दिस धाओ रे ॥
अमल जौवन धन मदे मन माति रे, हमर सङ्गे सेहे कर कत भाती रे ॥
मोञे बड रसिआ दुहे सब जान रे, कौतुके नृप जगजोतिमल भान रे ॥२६॥

॥ उपहास्य गीतं ॥ श्री ॥ चो ॥

सारस गमनि दिघर तुअ गात, वकुल धार केतकि सन दात ॥
सुन्दरिया रे ॥

२३. तत्रैव (३४)—१. स्त्रियः उपहासे पुरुषोक्तिः ॥ २. चोक ३. अवरोधिए ४. कपटकोप ५. मनाइअ ६. गाथिअ पूनु ।

२४. तत्रैव (३५)—१. प्रतिपुरुषोपहासेन स्त्रियः उक्तिः ॥ मल्लारी ॥ २. जओ ३. असि यौभन ।

२५. गीत संग्रह (७५)—१. (अभाव) २. आँकरे आँकरे ३. भाँति भाँति ४. रूअ अरु ५. गएन्द्रहि ६. विचारिए ७. सिझ न ।

कुहुर नयन देखि मोहि गेल भागि, वनचर अएन जैसन बुधि काजि ॥
वन रोब धन हम कहु कत भाति, चिकुर शरिय गेर कोहुक काति ॥
एहन रमनि देखि के नहि भूल, पुरुष समाज जतए तत घूर ॥
.. अनुसार नृप जगजोति गाव, शिव परसाद परिहास सुभाव ॥२७॥

॥ गोप्युक्त गीत ॥ मालव ॥ ए ॥

जकरा नहि थिक लाज, ताहि सञो करब की काज, रे छिया ॥
अपने बोलि नहि मानी, प्रकृति तोहर भल जानी, रे छिया ॥
आजुक सिनेह कालि नाही, किछु न होअए निरबाही, रे छिया ॥
कुजन वचन विसवासे, जीव लेब दए आगे, रे छिया ॥
कह नृप श्रीजगजोति, तेहि जने त्रिभुवन जीति, रे छिया ॥२८॥[1]

कृष्ण गोप्योक्ति प्रत्युक्ति गीतं ॥ केदारा ॥ प्र ॥

परिनत भेल मोर भाग, तोहर चरण मन लाग ॥
तोहि मोर हृदयक हार, सकल संसारक सार ॥
तोञे अति अबुझ गोआरि, आवे जनु तेजह मुरारि ॥
तोहि फास होअ छड़ाए, प्रेम बाढ़ल कहाँ जाए ॥
नृप जगजोतिमल भान, हर छाडि गति नहि आन ॥२९॥

॥ शान्ति रस गीतं ॥ बराली ॥ ए ॥[1]

ममता मोह[2] निवारि, देहक तत्व विचारि ॥ रे मन सर ॥
जञो गुरुगम अवधान, अह निशि[3] धरए धेआन ॥
ताहि से उतरिय पार, विषम जलधि संसार ॥
नृप जगजोति एहो गाव, अबहु तेजह जडभाव ॥ ॥३०॥

॥ शान्ति रस गीत[1] ॥ आसावरी ॥ प्र ॥

कामिनि रस बस ककरो बोल, काहुक मधुर मनोहर बोल ॥
ए शिव ए शिव धिक जंजाल, अनुखन जीव गरासए काल ॥ध्रुवं॥
कबहु छाडि काहु किछु न सोहाव, कानहि कान कहिनि काहुभाव ॥
छले-बले-कले केओ धने पए साध, माया बन्ध करओ[2] के बाध ॥
देखि संसार[3] पसार असार, हमे जानल हर पद पए सार ॥
नृप जगजोति भन हमे निरदोस, करहु उधार भवानी ईस ॥ ३१॥

३०. गीत पञ्चाशिका (१२)—१. कुर्जन चरित्र कथनान्तरं योग प्रकार नच्चारी ॥ बराली ॥ ए ॥ २. मेह ३. निसि ।

३१. गीत संग्रह (७७)—१. (अभाव) २. बंधकर ३. संसार ।

॥ शान्ति रस गीतं[1] ॥ बराली ॥ थो ॥

अबुझक आगे जे गुण गाव, अपन पराभव[2] अपने लाव ॥
बिनु बुझले पुनु सोर[3] डोलाव, काने सुनए मन वह (दिश)[4] धाव ॥
आँधि[5] नगर खन आँखि न सूझ, गुणि जन परिसम किछुओ न बूझ ॥
बहिरा के अग्रो कहिअ संदेश[6], हृदय वेदन हो बदन कलेश ॥
कहु विचारि जगजोति नरेश[7], जाहि विवेक ताहि दिअ उपदेश ॥३२॥

॥ देवी विज्ञप्ति गीतं[1] ॥ पंचम ॥ मु[2] ॥

कधुकैटभ महिषासुर मारल इन्द्र आदि देव तब[3] जेकरे,[4]
धूम्रलोचन जमघरहि पठाओल चण्डमुण्ड रक्तबीज सह रे[5] ॥
समरे भवानि हाथे वैरि जिव गेल सुरमुनि मने[6] हरख भेला ॥
सबे दिकपाल अपन पद[7] पाएल सबक विषाद खनहि दूर गेला ॥
ताहि उपर सुम्भ निसुम्भ[8] विडारल चौदिस जय जय किंनर गाव[9] ॥
जहा जहा संकट देवि उधरि लेह नृप जगजोतिमल भगतिहि लावे ॥३३॥

॥ आरति गीतं ॥ माद ॥ ए ॥

पवन आनि अवरुधित कए कहु सरिर पाप मय जारी,
पिउष आनि पुनु ताहि जिआए कहु लइ(अ)से देव निसारी ॥
हे मन ए विधि आरति लाय,
काम क्रोध लोभ मोह महारिपु जे विधि दुरहि पराए ॥ ध्रुवं ॥
अनिल अनल जल भूमि अकासहि पुनु उपजाइअ देह,
पर शिव पद पर परम जोति लय ताहि सयो राखिअ नेह ॥
जरा मरण जमराज पराभव चिन्तहु इ सब उपाय,
न रहु अज्ञान महातम आरति तेजहि मञ्जुल पाय,
माया पास पसार देखि कहु दिने दिने उपजु तरास,
गुरु सम बुझि नृपति जगजोतिमल शिवक भगति पए आस ॥ लूपू ॥

॥ इति कुञ्जविहार नाम नाटकं संपूर्णम् ॥

---

३२. तत्रैव (७६)—१. (अभाव) २. पराभव ३. सोल ४. हृहविश ५. आँधि ६. सन्देश ७. नरेश ।]

३३. नानाराग गीतसंग्रह (४५)— १. अभाव २. भैरवी ॥ प्र ॥ ३. मुति ४. जकरे ५. हरे ६. मुने ७. अपने पदे ८. शुंभ निशुंभ ९. किन्नर गावे ।